अर्न्तराष्ट्रीय डायनामिक कलीसियाएं

परमेश्वर ने हमें यह अद्‌भुत अवसर दिया है कि हम आपकी और परमेश्वर की कलीसिया की सेवा कर सकें। हमारी यह अभिलाषा है कि हम आपकी और बेहतर चेला बनाने में मदद करें। **अर्न्तराष्ट्रीय डायनामिक कलीसियाएँ** एक लाभ रहित सेवा का संगठन हैं।

हमारी यह कामना है कि पासबानों और अगुवों के पास पर्याप्त सुलझी हुई शिक्षा हो जो सामर्थी चेलों की उन्नति में मददगार हो जिससे यीशु मसीह का सुसमाचार संसार के हर देश व जाति तक पहुँच सकें।

मेरी यह कामना है कि यह प्रशिक्षण कार्यशाला आपके दर्शन, समय, युक्ति व विश्वास को विकसित करें ताकि आप ***अर्न्तराष्ट्रीय शिष्य-निर्माणकारी सेवा*** की शुरुआत कर सकें; जो कि बहुत सी जातियों पर यीशु मसीह के प्रेम का प्रभाव डाल सकें। मेरा ये भरोसा है कि परमेश्वर हमें इतिहास के रणनीति से भरे समय में ले आया है। एक मसीही होने के नाते इस पृथ्वी पर परमेश्वर की योजना के तहत हमारे हिस्से में भी बहुत से कार्य हैं जो पूर्ण होने हैं। प्रभु यीशु मसीह के अन्तिम शब्द जो उसने हमसे व चेलों से कहे- जाओ और जाति- जाति के लोगों को चेला बनाओ (मत्ती 28: 18- 20) यह बड़ी आज्ञा तभी पूरी होगी जब हम यीशु द्वारा दिए गए निर्देशों को भली भाँति जान लेंगे।

हमारी यह कामना है कि हम व्यक्तिगत और कलीसिया के रूप में आपकी बुलाहट को पूरा करने में सहायता कर सकें जिसमें परमेश्वर ने आपको बुलाया है। ताकि परमेश्वर को बहुतायत से महिमा मिले।

Al Middleton

एल मिडिल्टॉन

एक्ज़ीक्यूटिव डायरेक्टर

विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया का प्रयोग

1. विस्फोटक वृद्धि शिष्य–निर्माणकारी प्रक्रिया को जो पावर पौइन्ट ओवरव्यूह (हमारी वैबसाइट www.dynamicchurches.org पर उपलब्ध है) पासबानों, चर्च अगुवों या जो कोई रूचि लेता है। बाँटें (30–मिनट का वार्तालाप)

2. यदि आप आगे बढ़ने का निर्णय ले लेते हैं– तो सामर्थी प्रारम्भिक कार्यशाला के दिन व समय नियुक्त करें। (2 घण्टे)

3. सामर्थी प्रारम्भिक कार्यशाला का प्रबन्ध करें– अध्याय 1– इसके अन्तर्गत सामर्थी चेला बनने की प्रक्रिया के निरीक्षण को लें, जिससे कि जिन्होंने इसे नहीं देखा वो देखें तथा जिन्होंने देखा है वह उस पर पुन: विचार करें। (समय 30 मिनट) साथ में पहले अध्याय का परिक्षण (समय 1.3 घण्टे = योग 2 घण्टे) व छात्रों को निर्देश दिया जाए कि उन्हें दो–दो के जोड़ों में बैठना है तथा अध्याय दो, तीन व चार को आपस में आदान–प्रदान करते रहना है। और जब वह इस प्रक्रिया को कर रहे होते हैं, उसी बीच वह अपने एक चेले का अध्याय एक की शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। इसी प्रकार विस्फोटक वृद्धि – शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया की शुरूआत होगी।

4. सामर्थी शिष्यता कार्यशाला को आयोजित करने के लिए दिनॉक व दिन निर्धारित करें (2 घण्टे) सामर्थी प्रारम्भिक कार्यशाला के 4 से 6 सप्ताह पश्चात (3 के अनुसार)

5. सामर्थी शिष्यता कार्यशाला का आयोजन करें (2 घण्टे)

6. जिस प्रकार आपने सामर्थी प्रारम्भिक चेला बनाने की कार्यशाला में प्रशिक्षण दिया उसी प्रकार सामर्थी चेलो के विकास कार्यक्रम में प्रशिक्षण दें।

7. इस समय तक आपके कार्यों में अर्थपूर्ण लक्षण तूल पकड़ने चाहिए, बहुत से लोग दूसरों की मसीह में अध्याय एक के अनुसार अगुवाई कर रहे होंगे, बहुत से चेले उन्नति कर रहे होंगे, सब चेले बनाने वाले हो (केवल चेले नहीं होंगे) अत: वहाँ पर छोटे समूह (जीवन समूह) द्वारा जरूरतमन्द लोगों की देखभाल करने की जागृति होगी, अगुवे और बाकी लोग चाहेंगे कि उनकी कलीसिया एक शिष्य–निर्माणकारी कलीसिया बन जाये।

8. दिन नियुक्त करें (सामर्थी शिष्यता कार्यशाला के लगभग 4 हफ्तों के पश्चात) अपनी, जीवन समूह–व्यक्तित्व कार्यशाला व शिष्य–निर्माणकारी कार्यशाला के आगे बढ़ाने के लिए। (प्रत्येक कार्यशाला की अवधि 2 घण्टे हो)। यह तीनों कार्यशालाऐं एक ही दिन में या फिर तीन अलग–अलग दिनों में की जा सकती हैं।

9. अगुवों के विकास हेतू नियुक्त समय–सारणी निर्धारित करें। जो अगुवाई करना सीख रहे हैं उनके लिए प्रशिक्षण पुस्तिका – नव अगुवा प्रशिक्षण, अगुवा जो अगुवाई करता है– जीवन समूह अगुवों का प्रशिक्षण, तथा एक विजयी दल–प्रशिक्षक, प्रशिक्षण व स्रोत के लिए प्रशिक्षण पुस्तक के निर्देशों को देखें।

10. पासबान एवं पासबानों का जीवन समूह बनाने के द्वारा दूसरे पासबानों से निरन्तर मिलते रहें, जैसे–जैसे आप अपनी कलीसिया में चेलों की विस्फोटक वृद्धि का प्रबन्ध करते हैं, आप, शिष्य–निर्माणकारी प्रक्रिया का उल्लेख व उससे प्रोत्साहित कर सकते हैं। इस पुस्तक की शिक्षा एक से दूसरे कलीसिया में देने के द्वारा आप अपनी कलीसियाओं से आगे निकल सकते हैं।

प्रशिक्षण की कार्य पुस्तिका का प्रयोग कैसे करें

इस प्रशिक्षण पुस्तक का रूप सिखाने में सरल बनाया गया है जिससे कि जो चेले आपने विकसित किए हैं, चेला बनाने की विधि के द्वारा वे इस योग्य बने कि दूसरों को शिक्षित कर सकें (अपने आप से पुन: उत्पादन कर सकें)

इस पुस्तक को इस्तेमाल करने के बहुत से तरीके हैं जिसमें से कुछ निम्न हैं:-

1. स्पष्टता के लिए पुस्तक कई बार पढ़ें तथा विस्फोटक-वृद्धि शिष्य निर्माणकारी-प्रक्रिया का प्रारम्भ करें। जैसे- इस पुस्तक में दिया गया है चेला बनाएं।
2. यदि आप पासबान हैं तो कलीसिया के अगुवों के साथ इस विषय का उल्लेख करें, यदि वे इच्छुक हैं तो उनके साथ शुरूआत करें, चेला बनायें, एक-एक कर। तथा वह स्वयं के द्वारा बहुत से लोगों का उत्पादन करेंगे। जब चेले बनाने वाले जैसे - जैसे बढ़ते हैं क्षमताशील अगुवे खड़े हो जाऐंगे। उनमें से बहुत से लोग अपने शिष्य-निर्माण करने वाले समूह (जीवन समूह) बनाने को तैयार होंगे। आप उन्हें जीवन समूह में प्रशिक्षण देकर सहायता कर सकते हैं तथा स्पष्ट रूप से इस पुस्तक में दिए एक-एक निर्देशों का अनुसरण करते हुए, अगुवों का विकास कर सकते हैं। आप इस प्रशिक्षण को सामुहिकरूप या फिर व्यक्तिगतरूप से इसे दे सकते हैं शिष्य-निर्माणकरी कलीसिया बनने के लिए उन्हें जो आवश्यकता है वह उसे समझ जाऐंगे तथा उन्हें अनुभव भी होगा।
3. जब आपके चेलों व समूहों में वृद्धि होगी, तब दूसरे पासबान आपसे मदद चाहेंगे कि जैसे आप अपनी कलीसिया में करते हैं वैसा ही हमारी कलीसिया में करें। विस्फोटक वृद्धि-शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया का निशिक्षण हेतू पावर पॉइन्ट का उल्लेख अन्य अगुवों के साथ करने के लिए समय का प्रबन्ध करें। (यह हमारी वेबसाइट www.dynamicchurches.org में उपलब्ध है) आपके कुछ लोग विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया हेतू उनको प्रशिक्षण देकर शुरूआत करने में सहायता कर सकते हैं।
4. इस दर्शन को अन्य कलिसियाओं में जब तक बाँटते रहे जब तक कि आपके समुदाय तक पहुँचने के लिए काफी शिष्य-निर्माणकारी कलीसियाएं उत्पन्न न हो जाएं।

कैसे शिक्षा दें:

प्रशिक्षण की शुरूआत विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया के द्वारा करें। सामर्थी आधार, सामर्थी शिष्यता, जीवन समूह तथा सामर्थी व्यक्तत्व के कार्यशाला के लिए निर्देशों का अनुसरण करें। शिष्य-निर्माण प्रक्रिया के विस्तार के सत्र के दौरान चित्रों का उल्लेख तथा प्रश्नों पर चर्चा करें, जब आप लिखित बातों को पढ़ते हैं तो मुख्य बातों को समझाऐं।

ज्यादा अतिरिक्त विचारों को **उसमें न जोड़ें** क्योंकि इससे शिक्षा जटिल व उलझ जाऐगी। तथा इससे यह शिक्षा उत्पादन-रहित हो जाऐगी। इन सिद्धान्तों का इस्तेमाल करने के द्वारा, इस शिक्षा ने आपके जीवन को किस प्रकार से परिवर्तन किया है, जरूर बताऐं (अपने लोगों व दूसरों को)।

कार्यशाला कैसे आरम्भ करें:

कार्यशाल कैसे आरम्भ करें में आपको बहुत सी विषय सम्बन्धित सामग्री प्राप्त होगी जिससे आप अपने शिष्यों को एक से एक को शिक्षा का प्रारम्भ करने में खुलासा व अनुभव प्रदान करते हैं- ***सामर्थी आधार, सामर्थी शिष्यता, प्रारम्भिक जीवन समूह*** तथा ***सामग्री व्यक्तित्व।*** प्रत्येक कार्य की अवधि 2 घण्टे है।

आपकी ***शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया कार्यशाला के विस्तार,*** के तहत सामर्थी आधार, सामर्थी शिष्यता, व सामर्थी व्यक्तत्व, का बखान छोटे समूह में करने से तत्वज्ञान व रणनीति का विकास होता है। नवअगुवों हेतू निर्मित, जीवन समूह अगुवा व शिक्षक का कदम दर कदम अनुसरण करने के द्वारा आप प्रत्येक समूह से बहुत समूहों का उत्पादन कर सकते हैं। इस कार्य में ज्यादा से ज्यादा 2 घण्टे का समय लें।

सामर्थी भविष्य में कलीसिया की अगुवाई

यह पुस्तक ***सामर्थी भविष्य में कलीसिया की अगुवाई*** नामक एक शृंखला है जो निम्नलिखित बातें दर्शाती हैं कि कैसे **विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया कार्यशाला** (गहरे अक्षरों में) **लोगों के विकास व रणनीतियों** से जुड़ी हैं:

प्रशिक्षण की पुस्तक	के लिए प्रशिक्षण
1. **विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया प्रशिक्षण व कार्यशाला**	**पासबानों व अगुवों हेतू कि वे कैसे आरम्भ करें** - **एक से एक शिष्य-निर्माण तथा छोटे समूहों का निर्माण** - **उपयुक्त लिखित बातों को जीवन समूहों से कैसे जोड़ें** - **अगुवों का निर्माण तथा जीवन समूहों का विस्तार एक शिष्य-निर्माणकारी कलीसिया में करना**
2. अगुवाई करना सीखना नव-अगुवों का अगुवा प्रशिक्षण	जीवन समूह अगुवों हेतू जो वह अपने नव अगुवों के लिए इस्तेमाल करें।
3. अगुवा जो अगुवाई करें जीवन समूह के अगुवों का प्रशिक्षण	शिक्षकों के लिए जिनका इस्तेमाल वह जीवन समूह अगुवों हेतू करें
4. एक विजयी दल शिक्षकों के विकास हेतू स्रोत	पासबानों के लिए कि वह इनका उपयोग शिक्षकों के विकास हेतू करें।
5. सीमा से परे पहुँचना कलीसिया से कलीसिया को शिक्षा	पासबानों व अगुवों के लिए जो दूसरे चर्चों की सहायता - चेला निर्माण - स्थानीय या अर्न्तराष्ट्रीय प्रक्रिया में करना चाहते हैं।

यह सारे स्रोत हमारे कार्यालय तथा हमारी निम्नलिखित वेबसाइट में उपलब्ध हैं।

Dynamic Churches International
International/Canadian Address:
164 Stonegate Close,
Airdrie, Alberta, Canada, T4B 2V2
(403) 912-4438
dcimiddleton@shaw.ca
www.dynamicchurches.org

अतिरिक्त प्रतियों व जानकारी हेतु सम्पर्क करें:
रेव्ह. पीटर कांसुग
निदेशक
लीडरशिप ट्रेनिंग सेन्टर
बाबूबासा, देवदंगा, चम्पासरी
पोस्ट ऑफिस - आंचल-734003
सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल, भारत

All Scripture quotations in this publication are hrom the HOLY BIBLE, NEW INTERNATIONAL VERSION.
Copyright © 1973, 1978, 1984 by International Bible Society

ISBN 0-9731079-2-8
© 2005 Dynamic Churches International
All rights reserved. No part oh this publication may be copied or reproduced in any horm without written permission.
Permission is given to copy Horms in this book hor personal use only.

Printed by Devtech Printers and Publishers Pvt. Ltd. Email: devtech_printers@sihy.com

विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया

विषय सूची तालिका

कार्यशाला की शुरूआत कैसे करें :

विषय	पृष्ठ
विस्फोटक वृद्धि शिष्य–निर्माणकारी प्रक्रिया	7
सामर्थी आधारभूत कार्यशाला निर्देश	15
सामर्थी शिष्यता कार्यशाला निर्देश	16
जीवन समूह प्रारम्भ कार्यशाला निर्देश	17
सामर्थी व्यक्तत्व कार्यशाला निर्देश	27
शिष्य–निर्माणकारी प्रक्रिया कार्यशाला का विस्तार	29
जीवन–समूह अगुवों का सम्पर्ण	41
सफलता का प्रमाणपत्र	41

''सामर्थी भविष्य में कलीसिया की अगुवाई''

कार्यशाला का प्रारम्भ कैसे करें

एक विस्फोटक वृद्धि

शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया

का विकास

''सामर्थी भविष्य में कलीसिया की अगुवाई''

विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया

परिचय

निम्नलिखित बातें आपकी यह समझने में सहायता करेंगी कि आप किस प्रकार जीवन में परिपूर्ण ढंग से सेवकाई में चेला बनने व बनाने वाले बनें। अत: आप यह सीखेंगे कि आप DCI विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया का प्रयोग कर कैसे एक शिष्य-निर्माणकारी कलीसिया बन सकते हैं।

इसके बारे में विचार करें :

- जब आपने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण किया था तब मसीह जीवन को व्यतीत करने, व उसे अपना उद्धारकर्ता समझने में कौन आपके साथ था? क्या आप उनका परिचय दे सकते हैं?
- इससे आपकी आत्मिक वृद्धि में क्या भिन्नता आयी?
- अगर आपके पास कोई नहीं होता तो आपकी मसीही वृद्धि में रुकावट आयी होती?
- क्या आपने दूसरे लोगों की उनकी मसीही वृद्धि यात्रा में सहायता की है?

बड़ी तस्वीर को देखें :

परमेश्वर का अनन्त लक्ष्य संसार को बचाना है।

''मनुष्य का पुत्र खोये हुए को ढूढ़ने तथा उनका उद्धार करने आया'' लूका 19:10

यीशु ने कहा, *''हे पिता! जो कार्य तूने मुझे सौंपे थे उन्हें करके पृथ्वी पर मैंने तेरी महिमा की है।''* यूहन्ना 17:4

विचार :

यदि परमेश्वर इसी समय प्रगट हो जाये और पूछें *''क्या आपने व्यक्तिगत रूप से व कलीसिया के तौर पर वह कार्य पूरे किये जिन्हें मैंने तुम्हें दिया था?''* आपका क्या जवाब होगा?

क्या आप अपने जीवन व कलीसिया के प्रति परमेश्वर के उद्देश्य को समझते हैं?

परमेश्वर का उसकी कलीसिया के लिए उद्देश्य :

यीशु ने कहा -

''. . . जैसे पिता ने भेजा, मैं तुम्हें भेजता हूँ'' यूहन्ना 20:21

- परमेश्वर की सामर्थ : सुसमाचार - रोमियो 1:16
- कलीसिया हेतू प्रभु का उद्देश्य : सुसमाचार प्रचार - लूका 19:10
- परमेश्वर की युक्ति : सभी देशों के लोगों को चेला बनाओ - मत्ती 28:18-20

परमेश्वर की आज्ञा :

''तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख ... तथा अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम रख'' - मत्ती 22:37-39

परमेश्वर की महान आज्ञा :

''इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी मानना सिखाओ'' - मत्ती 28:18-20

एक शिष्य क्या है ?

- क्या एक परिवर्तित व्यक्ति शिष्य है ?

एक शिष्य है :

- जिसने प्रभु यीशु को ग्रहण किया हो तथा उसकी शिक्षाओं का अनुसरण करता हो।
- वह व्यक्ति जो मसीह के समान जीवन व्यतीत करता है न कि केवल उसके बारे में सीखता है।

वृद्धि के सिद्धान्त :

सभी स्वस्थ सजीव चीजें बढ़ती हैं।

परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के अन्दर स्वास्थ्य की वह क्षमता पैदा की है जो वृद्धि को पुन: उत्पादन करती है। **कलीसिया एक सजीव रचना है।**

शारीरिक परिवार :

आइये ध्यान दें शारीरिक वृद्धि किस प्रकार होती है ?

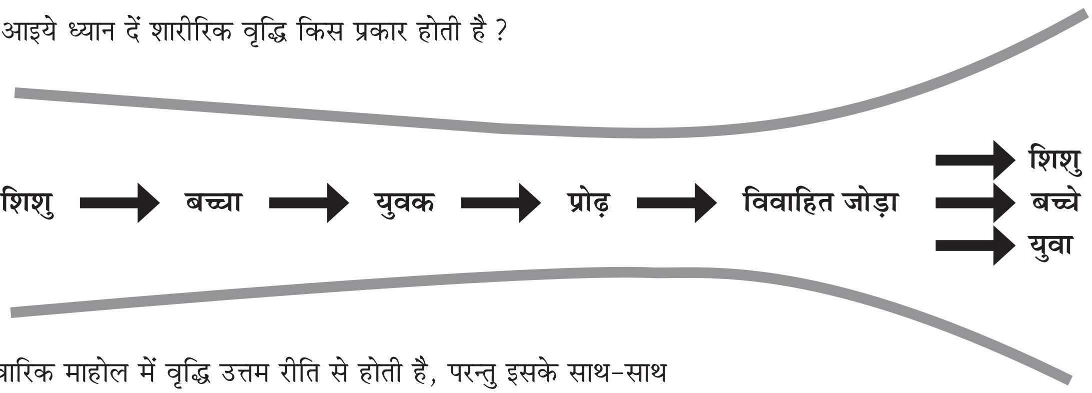

पारिवारिक माहोल में वृद्धि उत्तम रीति से होती है, परन्तु इसके साथ-साथ
एक से एक की पोषण व प्रशिक्षण की आवश्यकता है

आत्मिक परिवार :

आत्मिक वृद्धि, आत्मिक परिवार (छोटे समूह) के माहोल में अच्छे से होती है।
परन्तु एक से एक को पोषण व प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

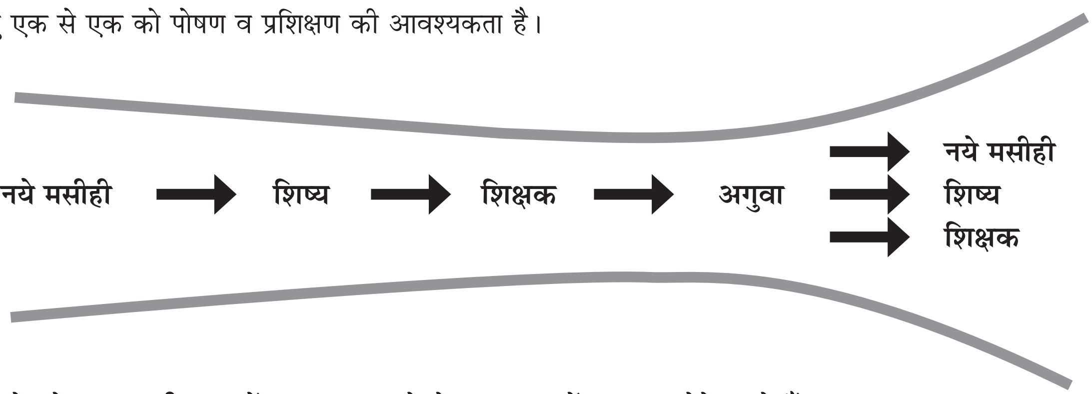

जब लोग केवल **अपनी** जरूरतों पर ध्यान लगाने से हटकर दूसरों पर ध्यान देने लगते हैं
तो हमें **परिपक्वता** के बहुत से लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

कलीसिया आत्मिक परिवारों का एक महाजाल होना चाहिए।

बहुत सी कलीसिएं बजाय आत्मिक परिवार तैयार करने के आत्मिक अनाथों को प्रगट करती हैं।

आत्मिक सन्ताने :

आत्मिक सन्तानों के रूप में यहाँ शिष्यों व शिक्षकों का उत्पादन प्रगट होता है।

- क्या आपकी कलीसिया में लोग प्रभु यीशु के भक्तिपूर्ण चेलों के रूप में रुपान्तरित हो रहे हैं?
- क्या वे सुसमाचार बाँट रहे हैं?
- दूसरे आत्मिक बच्चों को तैयार करने के द्वारा क्या वे उत्पादन कर रहे हैं?

किस प्रकार से आप ऐसी कलीसिया का अनुभव कर सकते हैं?

शिष्यों का निर्माण करने वाली प्रक्रिया

हमें एक बढ़ने वाले आत्मिक परिवार होने के लिए एक शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया को विकसित करना जरूरी है।

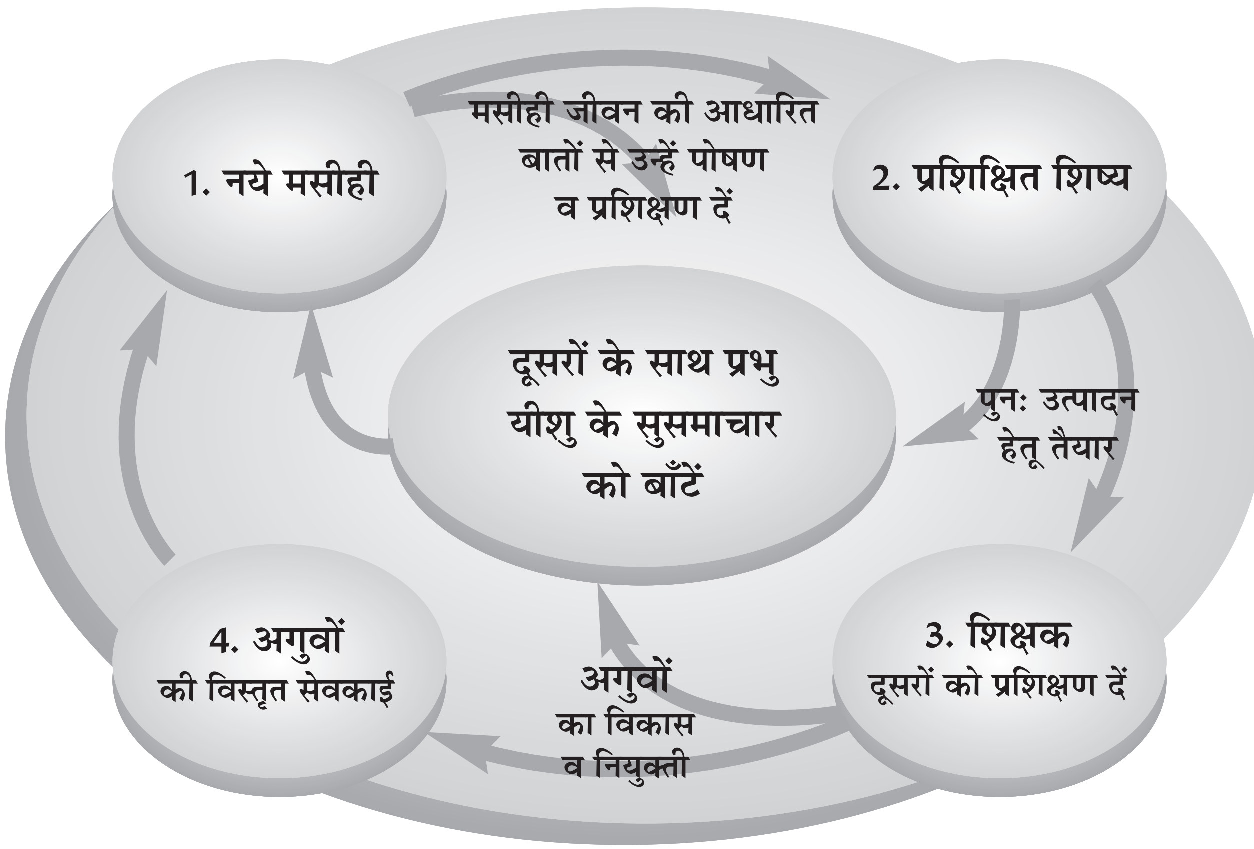

आप जैसे-जैसे निम्नलिखित व्याख्या में आगे बढ़ते चले जाते हैं, इस चित्र का अध्ययन करें तथा तीरों के निशान का अनुसरण करें।

यह प्रक्रिया परमेश्वर के उद्देश्य के साथ शुरू होती हैं जैसे हम . . .

प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार दूसरों के साथ बाँटें-

1. हमारे नये मसीहों तक पहुँचने के पश्चात उनका पोषण हो।

यह प्रक्रिया निरन्तर आगे बढ़ती है जब हमें . . .

नए मसीहों को मसीही जीवन की आधारभूत बातों में प्रशिक्षित करें

2. प्रशिक्षित शिष्य

क्योंकि उन्हें पुनःउत्पादन करने की शिक्षा दी गयी है इसलिए वे . . .

पुनः उत्पादन करने को तैयार

3. शिक्षक दूसरों को शिक्षा दे रहे हैं

अगुवों का विकास व नियुक्ति

उनकी ''शिक्षा देने की योग्यता व विश्वास योग्यता'' (तिमुथी 2:2) दिखाने के पश्चात, वह अब खास क्षेतृ में सेवा निभाने हेतू आगे को शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार है।

यह प्रक्रिया बढ़ती है जब यह पुनःउत्पादन करने वाले शिक्षक आगे . . .

4. अगुवे जो सेवकाई का विस्तार कर रहे हैं

ध्यान दें :- प्रक्रिया के हर हिस्से में खास बात प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को दूसरों तक बाँटना है।

चक्र 1 व 4 बताते हैं कि ज्यादातर कलीसियाएं कैसे कार्य करती हैं।

- यदि वह नये लोगों तक पहुँचते हैं तो वह सेवकाई में उन्हें लगाते हैं।
- बिना चक्र 2 या 3 के लोगों का विकास अगुवे के समान कभी न होगा।
- सेवकाई के पद ऐसे लोगों से भर जायेंगे जिन्हें खुद अपने उद्धार का पता नहीं।
- उन्हें शायद यह भी न पता हो कि प्रार्थना व बाइबल अध्ययन के द्वारा वह परमेश्वर से कैसे सम्पर्क साध सकते हैं।
- वे नहीं जानते होंगे कि पवित्र आत्मा कैसे प्राप्त होती है।
- कभी-कबार ही ऐसा अवसर होगा जब वह किसी को यीशु के बारे में बता दें।

आप क्या सोचते हैं उनकी सेवकाई कैसी होगी? ____________________

क्या आपकी कलीसिया की परिभाषा भी ऐसी है? ____________________

महान आज्ञा को पूरा करने के लिए एक शिष्य-निर्माणकारी
प्रक्रिया की आवश्यकता है।

सन्तों को तैयार करो-

''उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, कुछ को सुसमाचार सुनने वाला, कुछ को रखवाले, कुछ को उपदेश नियुक्त करके दे दिया, जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाऐं और सेवा का कार्य किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाये'' इफिसियों 4:11-12

कलीसियाओं का ढाचा या स्वरूप लोगों में वृद्धि दे सकता है।

सन्तों को स्वतन्त्र करना-

एक शिष्य-निर्माणकारी कलीसिया बहुत से ऐसे चेलों का निर्माण करने के द्वारा जो अपने समुदाय व संसार में प्रभु यीशु का प्रचार कर सकें, परमेश्वर की महान आज्ञा को पूर्ण करने की चाह रखती है।

आपको कितने चेलों व शिक्षकों की आवश्यकता पड़ेगी ?

- आपके शहर व स्थानीय समुदाय की जनसंख्या कितनी है ?-------
- यदि एक चेला 9 लोगों को सुसमाचार सुनाये तो (10 में 1) तब आपको------- चेलों की आवश्यकता पड़ेगी।
- पूरे शहर में प्रभु का कलाम पहुँचाने के लिए कितने और शिष्य-निर्माणकारी कलीसियाओं की आपको आवश्यकता होगी ?-------

कैसे हम शिष्यों की सेना को खड़ा कर सकते हैं ?

यहाँ वो बाते हैं जिससे आप शुरू कर सकें -

आप स्वयं भी अगुवों की उत्तर पुस्तिका के पीछे दिए गए निर्देशों को दुबारा पढ़कर अनुसरण करने के द्वारा प्रारम्भ कर सकते हैं या आप कलीसियाओं के सदस्यों को एकत्रित कर कुछ सभाओं का आयोजन कर सकते हैं।

- 2 घण्टे की सामर्थी आधार कार्यशाला तथा 4 से 6 हफ्तों पश्चात एक
- 2 घण्टे की सामर्थी शिष्यता कार्यशाला

ध्यान दें : सहायता के लिए ऑन लाइन कोर्स जो हमारी वेबसाइट www.dynamicchurches.org में देख सकते हैं।

स्वयं के पश्चात या फिर सामर्थी आधारभूत कार्यशाला के पश्चात विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया का आरम्भ करें।

विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया-

आपमें से प्रत्येक एक व्यक्ति को सामर्थी आधार की शिक्षा प्रदान करें। वह एक व्यक्ति किसी दूसरे को चुनकर अध्याय एक का पाठ पढ़ाऐं। तब आप अपने शिष्य को अध्याय 2 से लेकर अध्याय 4 तक पढ़ाऐं। प्रत्येक प्रशिक्षित व्यक्ति एक जन को शिक्षा दे ताकि हर बार एक नया शिष्य व शिक्षक जुड़ने पाये। ठीक ऐसा ही सामर्थी शिष्यता में भी करें।

क्षमताओं पर ध्यान दें :-

- आप एक व्यक्ति को सामर्थी आधार (4 अध्यायों) तथा सामर्थी शिष्यता (9 अध्यायों) = 13 सत्रों के द्वारा शिक्षा प्रदान करें। (आप केवल एक ही को शिक्षा दें, प्रत्येकजन, एक समय पर एक ही को शिक्षा दें)
- इस तरीके से इस वर्ष में 3 और लोगों को आप प्रशिक्षित कर सकते हैं और यदि प्रत्येक जन एक हफ्ते में एक चेला बनाता है तो उनका योग 52 होगा।
- अगर प्रारम्भ में लगभग 2 सप्ताह लगे तो, इसका अर्थ हुआ प्रतिवर्ष 26 नये शिष्य होंगे।
- परन्तु यदि अनुमानित समय लगभग 4 सप्ताह है तो प्रतिवर्ष चेलों की संख्या 13 नये शिष्य होंगे।
- अत: अब अपने द्वारा उत्साहित लोगों की संख्या से इसे गुणा करें। योग-----

आप कैसे इन सारे नये चेलों की देखभाल करेंगे ?

आप एक व्यक्ति को अपना शिष्य बनाना चाहेंगे तथा तत्पश्चात जीवन दायक वातावरण की रचना के द्वारा एक समूह का निर्माण करना चाहेंगे जिसमें 8-10 तक लोग इकट्ठा होने के इच्छुक होंगे।

आप या कोई और समूह की अगुवाई कर सकते हैं। सहायता के लिए वेबसाइट www.dynamicchurches.org देखें।

एक प्रभावशाली शिष्य-निर्माणकारी जीवन समूह-

एक जीवन समूह का अभिप्राय एक प्रेमी, देखभाल करने वाला पारिवारिक वातावरण है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ-वृद्धि का अनुभव कर सके। इसे बहुत सरल बनाया गया है यह भयभीत नहीं करता। यह बहुत ही आनन्द दायक स्थान है जहाँ हर बार अपने मित्रों को लाया जा सकता है।

एक जीवन समूह इन तत्वों से बना है।

(L) एक अगुवा	(A) नव-अगुवा (प्रशिक्षण के दौरान अगुवा)
(H) मेजबान	(C) सभी स्तरों में परिपक्वता में रुचिकर मसीही
NC नया मसीह	(S) खोजी (आमन्त्रित (H) उपरोक्त लोगों के मित्र)
CY आगन्तुक	(E) अपेक्षित लोगों के लिए खाली कुर्सी

यह समूह 4 निम्नलिखित लोगों द्वारा प्रारम्भ होता है जो L,A,H व C हैं।

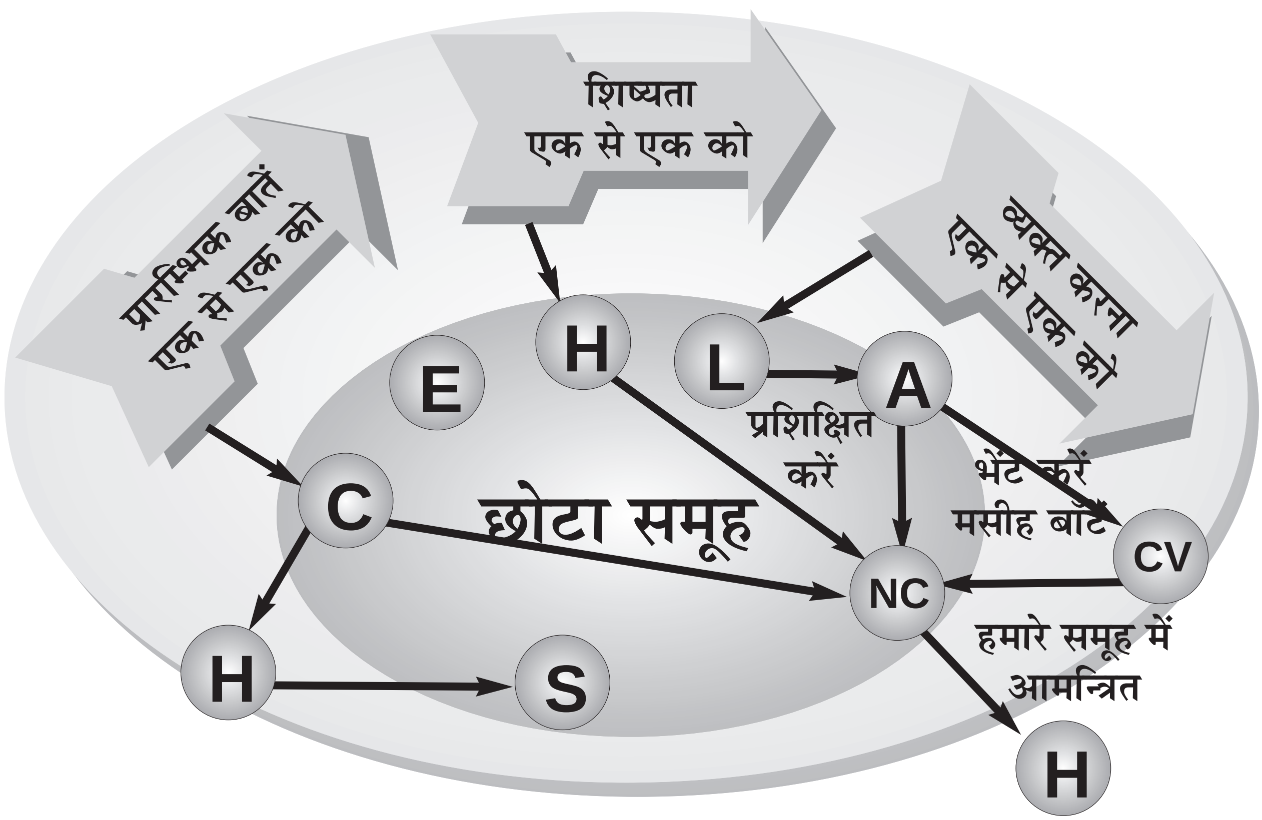

जब कुछ लोग सामर्थी आधार व सामर्थी शिष्यता का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हों, वे प्रथम जीवन समूह प्रारम्भ कर सकते हैं।

पिछले पृष्ठ में दर्शाये चित्र में अगुवा (L) सामर्थी व्यक्तत्व में नव-अगुवे (A) को प्रशिक्षण दे रहे हैं (सभी एक से एक को की गतिविधियों समूह के समय से अलग होती हैं) जैसे वह लोग भेंट करने के किसी आगन्तुक (CV) के घर जाते हैं, सुसमाचार सुनाया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को छोटे झुण्ड के समय में बुलाया जाता है। यदि कोई जन प्रभु यीशु को ग्रहण करने के लिए प्रार्थना करता है तो नये मसीही के समान (NC) सामर्थी आधार की शिक्षा प्राप्त करने को प्रोत्साहित किया जायेगा। उनका जोड़ा किसी मसीही (C) के साथ बना दिया जायेगा जो समूह का सदस्य है। सामर्थी आधार की शिक्षा के समापन पर कोई भी शायद मेजबान (H) उनका प्रशिक्षण सामर्थी शिष्यता में कर सकते हैं। वे नवअगुवों (A) से ''सामर्थी व्यक्तत्वें'' की शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं जिन्होंने अगुवों के साथ अपनी शिक्षा को समाप्त किया है।

जीवन समूह सेवकाई का सन्दर्भ या अर्थ प्रदान करता है।

एक से एक को + छोटा समूह = जीवन समूह

परिणाम :

जैसे जीवन समूह सदस्य किसी नये व्यक्ति को मसीह के बारे में बताते हैं, जो लोग यीशु को ग्रहण करते हैं उन्हें चेला बनाऐं, उनसे अगुवे विकसित होंगे तथा परमेश्वर कलीसिया की बढ़ौतरी करेगा।

मैंने बोया, अप्पुलोस ने पानी दिया, परन्तु परमेश्वर ने उसे बढ़ाया (कुरन्थियों 3:6)

जीवन समूह का पुन:उत्पादन ही (प्रत्येक समूह दो में बढ़ें) योग्य शिष्य व मसीह में आने वाले लोगों का परिणाम देगा।

प्रभु आपकी कलीसिया में क्या करें?

यदि आपको सहायता की आवश्यकता है, हमें सम्पर्क करें।

विस्फोटक वृद्धि
शिष्य निर्माणकारी
प्रक्रिया कार्यशाला

''सामर्थी भविष्य में एक कलीसिया की अगुवाई करना''

कार्यशाला प्रशिक्षक को निर्देश

ध्यान दें: *पास्टर/अगुवे सामर्थी आधार, व सामर्थी शिष्यता के द्वारा व्यक्तिगत रूप से लोगों को अगुवाई कर सकते हैं। प्रत्येक प्रशिक्षित व्यक्ति दूसरे को प्रशिक्षण दें जो अन्यों को शिक्षा दे सकें। वह इस कार्यशाला प्रणाली का इस्तेमाल और अधिक लोगों तक पहुँचने के लिए करें जो बाद में जुड़कर कार्यशाला की शेष सामग्री को समाप्त कर विस्फोटक-वृद्धि प्रक्रिया को प्रारम्भ कर सकें।*

सामर्थी आधार कार्यशाला (2 घण्टे)

- **प्रार्थना से प्रारम्भ करें**
- **निश्चित हो कि प्रत्येक व्यक्ति के पास सामर्थी आधार व अगुवों की उत्तर-पुस्तिका हो**
- **उन्हें अगुवों की उत्तर-पुस्तिका ढूढ़ने में सहायता करें।**
- अगुवा-उत्तर पुस्तिका में से ''सामर्थी शिष्यता एक अवसर'' जैसी बातों पर तथा समापन-प्रणामपत्र पर ध्यान दिलायें जो कि अध्याय 4 के अन्त पर दिया जायेगा।
- किसी हिस्सेदार को चुनें तथा सामर्थी आधार के सत्र 1 से प्रदर्शन करके दिखायें:-
  - अपना परिचय दें
  - अध्याय 1 में अगुवाई करें
  - 1 और 2 विषयों को शिक्षा दें (शिष्य आपके साथ-साथ अध्याय 1 व 2 से होकर शिक्षा पायें)
  - चेलों की सहायता करें कि वे जोड़े बनायें (एक पुरूष-दूसरे पुरूष के साथ व स्त्री, स्त्री के साथ)

ध्यान दें: *शिक्षक किसी हिस्सेदार के साथ जोड़ा बनाने को तैयार रहे या फिर जरूरत पड़ने पर 3 लोग एक साथ कार्य करें।*

- **जब जोड़ा बन जाये तो उनको अवसर प्रदान करें कि वह चुन सकें कि कौन नया मसीही व कौन शिक्षक बनेगा।**
- जहाँ पर आपने अध्याय की शिक्षा देना बन्द किया हो, वहीं से उन्हें प्रारम्भ करने को कहें।
- जैसे-जैसे वह अध्याय 1 में आगे अभ्यास करते हैं उनकी सहायता व प्रश्नों के जवाब देने को तैयार रहें।
- जब अध्याय 1 को लेकर पढ़ने का कार्य पूरा कर चुके, तो याद रखें कि प्रत्येक जन सारे प्रश्नों का जवाब ठीक-ठीक दें।
- **इस समय पर प्रश्नों के लिए समय दें।**
- **समूह पर प्रश्नों के लिए समय दें।**

  कार्यशाला के पश्चात ____________________ शिक्षा देगा ____________________

  कार्यशाला के पश्चात ____________________ शिक्षा देगा ____________________

  कार्यशाला के पश्चात ____________________ शिक्षा देगा ____________________

- **आप शायद दूसरे सामर्थी आधार कार्यशाला की स्थापना करना चाहें**

  दिनॉक ______________ समय ______________ स्थान ______________

- **उनको अवसर दें ताकि कार्यशाला की शिक्षाओं को समाप्त करने के पश्चात वे अलग से अपने साथी के साथ मिलकर अध्याय 4 को पूरा करने के लिए समय व दिन निर्धारित कर सकें। जैसे वह अपने साथी के साथ आगे बढ़ते हैं। हर साथी एक चेला चुनें, वह एक नया मसीही हो सकता है या गैर मसीही हो या परिपक्व न भी हो तब उस स्त्री/पुरूष को अध्याय 1 की शिक्षा से प्रारम्भ करें।**

- **उनके साथियों के साथ उन्हें कुछ समय प्रार्थना करनें दें तथा आप प्रार्थना करके समापन करें।**

सामर्थी शिष्य-निर्माणकारी कार्यशाला

- प्रार्थना के साथ आरम्भ करें
- ऐसे कुछ लोग हो अब तक के ''सामर्थी सिद्धान्तों के अनुभव को विस्तार पूर्वक बतायें
- निश्चय कर लें कि हर एक व्यक्ति के पास सामर्थी शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया तथा शिष्यों के सामान्य निर्देश की प्रति हो, तथा कार्यशाला के अन्त तक प्रत्येक की सहायता करें।
- बिना कुछ टिप्पणी किये साधारण रूप से निर्देशों को पढ़ें।
- सभी के जोड़े बनायें (पुरूष के साथ पुरूष, स्त्री के साथ स्त्री)
- शिष्यों को निर्णय लेने दें कि वे चेले या शिक्षक बनें

ध्यान दें:- प्रशिक्षण शुरू होने पर चेले बनाने वालों को पहचाने जिन्होंने अध्याय 1 को समाप्त किया हो तथा जो पहली बार इस कक्षा में मिल रहे हैं। उन्हें अपने अनुभव बांटने दें, यदि उनका अध्ययन सम्पूर्ण ढंग से पूरा न हुआ हो तो आप पूरा करने में उनके सहयोगी बनें।

- पृष्ठ-1 खोलें तथा उन्हें सारी कार्यक्रम को जो अध्याय एक में हैं जाँचने दें। जो आप दोनों मिलकर पूरा करें उस पर सही का निशान लगाऐं। जैसे आपने प्रशिक्षण प्राप्त करते समय किया था ठीक वैसे ही करें।
- उन्हें अध्याय-1 से ''यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता जानना'' के विषय पर कार्य दें।
- कार्यशाला का शिक्षक, जब आप कक्षा में, घूमते हुए नज़र रख रहे हैं, प्रश्नों के समाधान हेतू उपलब्ध रहें। ध्यान दें, सब जोड़ों में हों व कार्य कर रहे हों।
- जब समय हो जाये तो सारे झुण्ड को एक साथ इकट्‌ठा करें व प्रश्नों के दिये उत्तरों पर वाद-विवाद करने दें जिससे वह और मजबूत हो तथा दूसरों को चेला बनाने के योग्य बन जायें।
- इस समय उन्हें प्रश्न करने का अवसर दें।
- समुह को एक साथ इकट्‌ठा करें और निर्णय ले कि कौन किसका शिष्य होगा।

  कार्यशाला के पश्चात ______________________ शिक्षा देगा ______________________
  कार्यशाला के पश्चात ______________________ शिक्षा देगा ______________________
  कार्यशाला के पश्चात ______________________ शिक्षा देगा ______________________
- अध्याय 2 को पुन: दोहरायें
- इस कार्यशाला के दौरान अपने साथियों के साथ अलग से मिलकर अध्याय 1 की शिक्षाओं को पूरा कर लें।
- अवसर दें कि सब अपने-अपने साथियों के साथ मिलकर बचे हुए अध्यायों को कार्यशाला के बाद सप्ताह में पूरा करें। सामर्थी सिद्धान्तों की शिक्षा प्राप्त करते समय हर एक अपने लिए एक व्यक्ति को ढूढ़ लें तथा अध्याय 1 से प्राप्त शिक्षा के अनुसार उसे शिष्य बनायें।
- आप इस कार्यशाला के साथ-साथ दूसरी कार्यशाला की योजना बना सकते हैं। (समय 2 घण्टे)

  दिनॉक ________________ समय ________________ स्थान ________________
- सभी को समय दें कि वह अपने साथी के साथ प्रार्थना कर सकें तथा आप प्रार्थना करके समाप्त करें।

जीवित समूह की अभ्यास कार्यशाला (2 घण्टे)

अब आप सामर्थी आधार व सामर्थी शिष्यता कार्यक्रम को समाप्त कर चुके हैं। तथा आपने विस्फोटक वृद्धि शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया के आनन्द का अनुभव भी किया है। अत: अब आप भावी शिष्य हेतू उनकी प्रशिक्षण को ध्यान में रखते हुऐ समूह के निर्माण की महत्वता को समझते हैं। जब आप उत्तमता से प्रारम्भ करेंगे तो आपको दिखेगा कि कैसे क्षमताशील लोग, शिष्य-निर्माणकारी कलीसिया में तबदील होते हैं। जैसे-जैसे आप प्रारम्भिक जीवन समूह को आरम्भ करते हैं, यह कार्यशाला आपको अनुभव व भरोसा प्रदान करेगी।

एक नाम में क्या है?

हो सकता है कि पहले से ही आपके पास छोटे झुण्ड या घरेलू कलीसिया हों। यदि इन सेवकाइयों में ''एक से एक'' शिष्यता तथा अगुवों के विकास के अंश सम्मिलित नहीं है अथवा आप इन महत्त्वपूर्ण तत्वों को सम्मिलित करना चाहते है तो शायद आपको अपने समूह के लिए एक दूसरे नाम को चुनना पड़े। जब तक वह नाम समान बना रहता है तो हमें धारणाओं को बदलना कठिन होगा। आप किसी भी अन्य नाम का चुनाव कर सकते है परन्तु यह नाम आपके लिए एक सुझाव है।

''जीवन समूह'' नाम शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया के मुख्य तत्वों को प्रदर्शित करती है। उदाहरण :

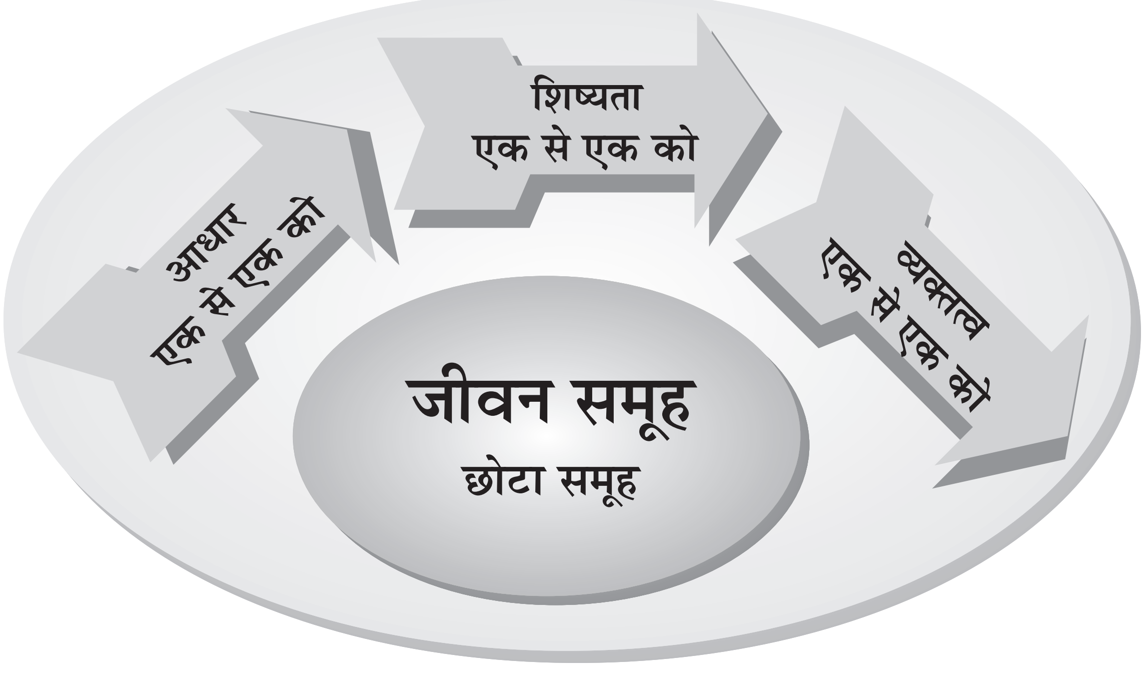

एक से एक शिष्यता + **छोटा समूह** = जीवन समूह

इस कार्यशाला में आपके जीवन समूह के छोटे समूह समय का अनुभव करेंगे।

छोटे समूह का अनुभव -

कुछ ऐसे लोगों को चुने जो विस्फोटक वृद्धि-शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया का हिस्सा रहे हों तथा समूह प्रारम्भ में भाग लेना चाहते हों। (यदि आपके पास ज्यादा समर्पित अगुवे हैं तो आप एक से ज्यादा समूहों को आरम्भ का सकते हैं)

प्रत्येक अभ्यास समूह के लिए 4 से 6 लोगों का चयन करें-
अगुवे ______________________________
नव-अगुवे ______________________________
मेज़बान ______________________________
अन्य मसीही (क्षमताशील अगुवे) ______________________________
अपने नये समूह में नये मसीही या गैर मसीहीयों को जोड़ें ______________________________

याद रखें:- 4 से 6 लोगों के समूह में से प्रत्येक समूह एक चयन करें। समूह अगुवा एक नव अगुवा व मेज़बान का चयन करें। आप जबकि नीचे दीये गए कार्यक्रम का अनुसरण करते हैं जो यह बताता है कि वह अपने साप्ताहिक छोटे समुहों में क्या कर रहे होंगे; आप इस बीच उनको अगुवों का चयनकार्य व दिशा निर्देशन का कार्य सौंप दें। एक साथ मिलकर इस समय का आनन्द उठायें।

छोटा समूह का कार्यक्रम

स्वागत (15-20) मिनट

मेजबान

- एक नजदीक चक्र में बैठने का प्रबन्ध करें जिसमें एक कुर्सी अतिरिक्त हो।
- सबका अभिनन्दन मित्र के समान करें।
- जो लोग उपस्थित हैं उनका लेखा रखें। **उपस्थिति रजिस्टर** (पेज 22) का इस्तेमाल करें।

अगुवा

- प्रार्थना से शुरू करें या किसी से प्रार्थना करने को कहें।

नव अगुवे (अगुवे जो प्रशिक्षण पा रहे हैं)

- **व्यक्तव्य** के समय की अगुवाई करें
  - **व्यक्तव्य प्रश्नों** (पेज 23) का इस्तेमाल करें। एक प्रश्न को चुनें तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसका जवाब देने का अवसर दें या वे इस विषय पर अपने अच्छे व बुरे अनुभव बाँटें या फिर जाने दें।
  - समय-समय पर एक या दो लोगों को अपनी गवाही बाँटने दें।
  - दिमाग के **खुले व ईमानदार** बने रहें।

अराधना (15-20) मिनट

अगुवा

- एक **साथ मिलकर** एक या अधिक स्तुति गीतों को गायें या प्रार्थना का जवाब देने के लिए **उसकी स्तुति करें।**
  - **परमेश्वर के गुणों पर ध्यान लगायें**
  - प्रभुभोज को आपस में समय-समय पर बाटें
  - प्रत्येक जन को भागीदार होने को **प्रोत्साहित करें**। चक्र में आसपास प्रार्थना **न करें** और न ही किसी को नीचा दिखायें।

जीतें (20–30 मिनट)

नव-अगुवा (प्रशिक्षण में अगुवे)

- जो लोग एक से एक की प्रारम्भिक बातों, शिष्यता या व्यक्तत्व को कर रहे हैं **उनकी प्रगति की जाँच करें।**
- जो लोग सीखने व सिखाने को तैयार हो उन लोगों को पहचाने।
- अपने प्रचार सम्बन्धी, रणनीती की योजना बनायें व लेखा रखें।
- जिन पर आप सेवा निभाते हैं उनके प्रति आपकी प्रार्थनाओं के परिणाम का लेखा रखें।
- प्रार्थना समय की अगुवाई करें। प्रार्थना करें कि कोई उस खाली कुर्सी को भरें। छोटे-छोटे वाक्यों में प्रार्थना करना सीखें। अपने निवेदनों को प्रार्थनाओं में रखें। इन प्रार्थना विषयों पर प्रार्थना करने को दूसरे लोग आपके साथ मिल सकते हैं प्रार्थना करें कि मित्रों व पड़ोसियों में यीशु के सुसमाचार प्रचार हेतू अधिक अवसर प्राप्त हो।
- प्रार्थना विषय व उनके उत्तर को – ज्यादा प्रार्थना – ज्यादा सामर्थ – ज्यादा स्तुति। (पेज 24) के अनुसार लिखें।

वचन (20–30 मिनट)

अगुवा

- बाइबल अध्ययन समय की अगुवाई करें। आज के लिए में दिये (पेज 25) के जीवन अध्ययन नमूने का इस्तेमाल करें। याद रखें कि आप प्रचार या शिक्षा नहीं दे रहे परन्तु इस वार्तालाप को समूह के अन्य सदस्यों तक उपलब्द करा रहे हैं।
- समूह को घनिष्ठता में लाये – कोई सूचना दें
- प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करें कि जब वह दोबारा यहाँ आऐ तो अपने साथ एक गैर मसीही या मसीही व्यक्ति को साथ लाये खासतौर पर उसको जिसे आप शिक्षा दे रहे हैं।
- प्रार्थना के साथ समूह को समाप्त करें।

सदैव समय पर शुरू व समाप्त करें!

मेजबान

- अल्प (आहार वैकल्पिक) जब आप समाप्त कर चुके तब उन्हें अल्पाहार वितरित करें ताकि अगर वह लोग जाना चाहें तो जा सकें। यदि आप अल्पाहार दे रहे हैं तो ध्यान दें कि वह साधारण चीजें हों।

आज समाप्त करने से पूर्व नीचे दी गयी योजना पृष्ठ को समाप्त करें।

वार्तालाप व योजना के समय में पास्टर/अगुवे अगुवाई करें।

❑ 1. जो लोग आरम्भ-समूह में भाग लेना चाहते हैं उनसे समर्पण प्राप्त करें। अत: सम्भव हो तो उनका असल समूहों में प्रबन्ध करें।

प्रत्येक समूह :

❑ 1. अपने जीवन समूह अगुवे की पुष्टि करें ____________________

❑ 2. अपने नव-अगुवे की पुष्टि करें ____________________

❑ 3. अपने मेज़बान की पुष्टि करें ____________________

❑ 4. पुष्टि करें – मिलने का दिन __________ प्रारम्भ का दिन __________
प्रारम्भ का समय __________ अन्त का समय __________

❑ 5. अपने छोटे समूह की सेवकाई के लिए नाम का चयन करें। नाम में क्या हैं (पेज 18) को देखें।

❑ 6. बाइबल अध्ययन के लिए शिक्षा सामग्री चुने। आप जीवन समूह के 24 अध्यायों की शृंखला से प्रारम्भ करना चाहेंगे। देखें www.dynamicchurches.org वहाँ से आप विषय सामग्री चुन सकते हैं। अपने समूह के लिए शिक्षा सामग्री चुनना देखें (पेज 26)

❑ 7. ऐसे समय का चयन करें जिसमें जीवन समूह के अगुवे नव अगुवों से मिलकर, अगुवाई करना सीखें-नव अगुवों का प्रशिक्षण का अध्ययन कर सकें (माह में एक बार 1 घण्टे हेतू) तथा सामग्री व्यक्तत्व का अध्ययन भी करें (माह में एक बार 2 घण्टे के लिए)

अगुवाई करना सीखें सत्र : दिनाँक __________ समय __________ स्थान __________

सामर्थी व्यक्तत्व प्रशिक्षण : दिनाँक __________ समय __________ स्थान __________

अपने उत्तेजक अनुभवों को, जीवन समूह को प्रारम्भ करने के लिए बाँटें। प्रत्येक व्यक्ति की प्रशंसा करें।

प्रार्थना के साथ समाप्त करें।

जीवन समूह

साप्ताहिक उपस्थिती रजिस्टर

अन्तिम नाम पति पत्नी दिनांक																			

व्यक्तित्व हेतू प्रश्न

- अपने जीवन के सबसे आनन्दित दिन को व्यक्त करें।
- जो आपको नहीं जानता है उसको आप अपने बारे में कैसे बतायेंगे?
- कौन-सा रंग आपकी भावनाओं को आज प्रगट करता है?
- आपके मित्र में आपको सबसे अच्छी बात क्या लगती है?
- कौन-सा सबसे असाधारण तरीका रहा जिसके द्वारा प्रभु ने आपसे बात की?
- सबसे सर्वोत्तम पुस्तक आपने कौन-सी पढ़ी है क्यों?
- जब आपका देहान्त हो तो कौन-सी चीज आप चाहेंगे कि आपकी कब्र में रखी जाय और क्यों?
- घरेलू कार्य में सबसे आनन्दमय कार्य आपको कौन-सा लगता है?
- अभी तक सबसे उत्तम तोहफा आपको कौन-सा मिला? क्यों?
- यदि आपको स्वयं में एक चीज बदलने का अवसर मिले तो वह क्या होगा?
- क्या कभी परमेश्वर आपके लिए शब्दों से बढ़कर हुआ?
- 12 वर्ष की उम्र में आप जहाँ थे उस स्थान व समय की कुछ यादों को बाँटें।
- आपकी बढ़ती उम्र के कौन-सा खेल आपको सबसे पसन्द था?
- कौन सी दो या तीन विशेष मूल्यवान जागीर आपके पास है? और वह कीमती क्यों है?
- आप भविष्य में किस एक चीज़ को चाहते हैं?
- कौन सा एक रिश्ता है जिस पर आप समय देना चाहेंगे?
- पहली बार आपने प्रभु यीशु मसीह के बारे में कब सुना। आपने उसके बारे में क्या सोचा था?
- मौसम के हाल जैसे अपने जीवन के हाल को बयान करें?
- कौन सी एक ऐसी बात है जो आपको सबसे ज्यादा सन्तुष्टि प्रदान करती है?
- मेरा सबसे खतरनाक अनुभव जो अभी तक रहा . . .
- मैं . . . की यात्रा करना पसन्द करूँगा।
- आपके पास खाली समय कब होता है? तथा इसमें आप क्या करना पसन्द करते हैं?
- घर में आपकी पसन्दीदा जगह क्या है और क्यों?
- आपके बचपन में क्या आपका कोई पालतू जानवर था? वह क्यों खास था?
- अपने व्यवसाय के अन्दर अगले वर्ष ठीक इसी समय आप क्या उन्नति देखना चाहेंगे?
- (मसीह को छोड़) आपके जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला व्यक्ति कौन है? क्यों?
- आपकी बढ़ती आयु में आपका घनिष्ठ मित्र कौन था? क्यों?
- मैंने कभी नहीं सीखा . . .
- अगला वर्ष मुझे इसलिए बेहतर लगता है क्योंकि . . .
- लोगों को अचम्भा हो कि शायद मैं -------
- तनाव मुक्त होने के लिए आप सप्ताह के अन्तिम दिनों में क्या करते हैं?
- किन बातों से आपको चिन्ता होती है?
- कौन-सी खुशबू आपको पसन्द आती है व इस खुशबू से आपकी कौन सी यादें जुड़ी हैं?

ज्यादा प्रार्थना
ज्यादा सामर्थ
ज्यादा स्तुति

प्रार्थना निवेदन	दिनॉक	जवाब मिला	दिनॉक

जीवन अध्ययन

प्रथम शिष्यों को बुलाया जाना

लूका 5:1-11

व्यक्तत्व प्रश्नों में से एक प्रश्न को ले या **इस प्रश्न का जवाब दें** ''आपके पहली बार कैसे लगा जब . . .'' प्रत्येक जन इन में से एक का चयन करें तथा उसे बाँटें।

1. तैरने की कोशिश की
2. नये खेल खेलने की कोशिश की
3. स्कूल से भागे
4. घर छोड़ा
5. नौकरी प्राप्त की

वचन से सामना :

लूका 5:1-11 पढ़ें तथा **निम्न प्रश्नों का जबाव दें।** बहुत से लोगों को अवसर दे कि वे एक जवाब चुने और बताये कि उन्होंने इस प्रकार की प्रतिक्रिया क्यों चुनी :

1. क्या आप यह सोचते हैं कि संजोग से पतरस ***''जाल धो रहा था''*** जब प्रभु यीशु मसीह को नाव की जरूरत थी . . . या फिर यह सब परमेश्वर की योजना थी?
   अ. यह एक संयोग था
   ब. परमेश्वर की योजना थी
   स. पता नहीं

2. यदि आप शमोन पतरस के स्थान में होते और यीशु कहते ***''अपनी नाव को गहराई में ले चल, तथा अपने जाल को डालो''*** तब आपने कैसे प्रतिउत्तर दिया होता?
   अ. जैसे पतरस ने किया
   ब. यीशु से कहता आप प्रचार में लगे रहो और मुझे मछली पकड़ने दो
   स. मैं ऐसा न करने के लिए कोई बहाना बना देता
   द. दूसरे समय की सलाह देता जब मछलियाँ खाती
   इ. अनसुना कर आगे बढ़ जाता।

3. जब उन्होंने ***''अनगिनत मछलियों को पकड़ा और उनके जाल फटने लगे''*** आप क्या सोचते हैं शमोन पतरस ने क्या सोचा होगा?
   अ. ढेरों मछलियाँ पकड़ने के बाद मुझे कितना पैसा मिलेगा
   ब. यीशु मसीह पर शक करके कितना गलत काम किया
   स. वह नहीं जानता था कि क्या कहा जाय
   द. वह पहचान गया कि यीशु कौन था।

4. जब शमोन पतरस ने कहा ***''मेरे पास से दूर चला जा: मैं एक पापी मनुष्य हूँ''*** उसका क्या मतलब था?
   अ. मैं नम्र होता हूँ क्योंकि आप मछली पकड़ने के बारे में मुझसे ज्यादा जानते हैं।
   ब. मैं आपके पास होकर बेचैनी महसूस कर रहा हूँ क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूँ।
   स. मैं समझ गया हूँ कि जो तू कहता है वह है, परन्तु मैं तेरा अनुसरण नहीं कर सकता हूँ।
   द. मुझे और शर्मिन्दा न करें, मुझे अकेला छोड़ दें।
   इ. मैं भ्रमित हूँ। मैं तेरा अनुसरण करना चाहता हूँ परन्तु यदि मैं हाँ कहूँ तो मुझे मेरे जीवन में कई परिवर्तन लाने होंगे जिनसे मैं भयभीत हूँ।

लागू करना :

अपनी खुद की आत्मिक यात्रा पर ध्यान दें

1. आपकी आत्मिक शुरूआत कैसे शमौन पतरस के तुल्य है ?
   अ. नाटकीय नहीं
   ब. अधिक ज्ञानवर्धक
   स. भ्रमित है
   द. अधिक नाटकीय
   इ. फर्क परन्तु हटकर सच्चाई
   फ. पक्का पता नहीं

2. आप अपनी जीवन नैय्या की स्थिती किस प्रकार से बखान करेंगे ?
   अ. डूब रही है
   ब. थमी हुई
   स. गलत दिशा की ओर जा रही है।
   द. मरम्मत की आवश्यकता है
   इ. सही मार्ग में जा रही है।
   फ. तूफान के बाद ठीक हो गयी

3. यदि यीशु आपसे कहें ***''अपनी नाव को गहराई में ले चलो तथा जाल को डालो''*** तो आप कैसे प्रतिक्रिया देते।
   अ. मैं डर जाता
   ब. सोचता कि एक मूर्खता पूर्ण कार्य शुरू हो गया है
   स. ठीक है लेकिन
   द. मैं इसे करूँगा यदि कोई मेरा साथ दे
   इ. बहुत अच्छा, कब हमें प्राप्त होगा
   फ. मैं नहीं समझा कि आपका क्या मतलब है

4. कौन-सी बात आपको अग्रसर करती है
   अ. कीमत गिनने का समय
   ब. संगठित होने का समय
   स. पता नहीं
   द. मेरे मित्रों का सहारा
   इ. मेरे जीवन को शुद्ध करने में सहायता
   फ. आज्ञाकारिता

अपने समूह के लिए पाठ्य-पुस्तकों की सूची चुनना

जब बाइबल अध्ययन की पाठ्य सामग्री का चुनाव करें तो ज्यादा जोर क्रिया पर हो क्योंकि वर्तमान में चर्च सदस्यों की सामान्य समस्या ''प्राप्त करने'' की धारणा है ज्यादा से ज्यादा ज्ञान को चाहते हैं परन्तु देने में अभाव है, दूसरों के जीवन में कुछ व्यय करने तथा साक्षी बनने के क्षेत्र में मसीह हेतू बहुत आज्ञाकारिता है। इसलिए बाइबल अध्ययन के द्वारा एक क्रियाशील आज्ञाकारी, प्रतिक्रिया की धारणा जरूर उनमें उत्पन्न हो।

पाठ्य-पुस्तकों के चुनते समय इन प्रश्नों पर ध्यान दें :

1. हमारे समूह का उद्देश्य क्या है?
2. इस समय हमारे समूह की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता क्या है?
3. हमारा समूह कितना आत्मिक परिपक्व है?
4. कलीसिया के वर्तमान मुख्य केन्द्र में यह किस प्रकार फिट होता है?
5. क्या यह 20-30 मिनट के साँचे में फिट होता है?

बाइबल अध्ययन की पाठ्य सामग्री पासबान के संदेशों पर आधारित हो सकती है। पास्टर एक संदेश की रूप रेखा तैयार करके सभा में प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसे उपलब्द करा सकते हैं उसके अलावा, वह या कोई दूसरे जन छोटे समूहों में पूछे जाने के लिए प्रश्नों को तैयार कर सकता है जो लागू किये जायें। अगुवे इन प्रश्नों को बनाने में सहायता भी कर सकते हैं। वे अपने समुहों को उत्साहित करें कि उनकी वास्तविक जिन्दगी बदलें व वह और अधिक मसीह केन्द्रित जीवन जियें।

निश्चित करें कि विषय वस्तु समूह के लिए जानी-पहचानी हो, जिससे उनमें ज्यादा से ज्यादा वार्तालाप की गुजांइश हो। पाँच या छः प्रश्नों के पश्चात प्रगटीकरण करना साधारणतः काफी होगा। वे प्रश्नों में ''क्या'' से ज्यादा ''क्यों'' को सम्मिलित करें।

विकल्प में दूसरी पुस्तकों या पाठ्य सामग्री - जिसमें विषय विशेष बाइबल अध्ययन या खास तौर पर निर्माण हुई सामग्री का इस्तेमाल कर सकते है। जैसे- जीवन सम्बन्धी अध्ययन-डायनामिक चर्चेज इन्टरनैशनल द्वारा (25 पेज पर नमूना देखें)

याद रखें कि ज्यादातर समूह के लोगों एक से एक को प्रशिक्षण देने में दूसरे विद्यार्थी या शिक्षक के साथ सम्मिलित होंगे। समूहों के मिलने से पूर्व किसी प्रकार के ग्रहकार्य की तैयारियाँ नहीं होंगी। इससे उन लोगों को निराशा होंगी जिन्होंने अपना काम पूरा नहीं किया है। इसके साथ-साथ प्रत्येक अध्याय अपने आप में अलग व नया हो, (वह पिछले अध्याय से जुड़े न हो) क्योंकि किसी भी व्यक्ति के लिए शिक्षा के मध्य से प्रारम्भ करना कठिन होगा।

जो लोग ***''जीवन समूह अगुवे''*** बनना चाहते हैं। वे इस पुस्तक के समाप्त होने पर ***''जीवन समूह अगुवे का समर्पण फार्म''*** भरें। पुस्तक के अन्त में प्राप्त ***''कार्य समाप्ति का प्रमाणपत्र''*** जितनों ने प्रशिक्षण पूर्ण कर लिया है उनके लिए प्रशिक्षण दाता प्रमाणपत्र को भरे व हस्ताक्षर करें।

सामर्थी व्यक्तव्य कार्यशाला (2 घण्टे)

याद रखें :- इस कार्यशाला में आने के लिए, प्रत्येक भागीदार ने सामर्थी व्यक्तव्य की शिक्षा प्राप्त की हो तथा अध्याय एक की सम्पूर्ण सामर्थी पहले ही प्राप्त हो। सामर्थी व्यक्तव्य के प्रत्येक अध्याय में साधारण अपेक्षा की जाती जाती है कि आपके मिलने से पूर्ण आपने वह अध्याय समाप्त कर लिया हो।

- प्रार्थना से प्रारम्भ करें :
- सामर्थी व्यक्तव्य व सामर्थी शिष्यता के आधार पर कुछ लोग संक्षेप में अपने अनुभव व्यक्त करें।
- निश्चित करें कि प्रत्येक के पास में ''सामर्थी व्यक्तव्य'' की सामग्री व विद्यार्थीयों के लिए सामान्य निर्देश हो। उनकी सहायता करें कि वह इस सामग्री को ''सामर्थी व्यक्तव्य'' के अन्त तक बनाये रखें।
- बिना कोई टिप्पणी किये सामान्य निर्देशों को पढ़ें (कुछ निर्देश सामर्थी शिष्यता के समान ही है)
- प्रत्येक जन ने सामर्थी व्यक्तव्य का अध्याय एक जरूर पूर्ण किया हो। (यदि हिस्सेदारों ने प्रथम अध्याय की शिक्षा को पूर्ण नहीं किया है तब आपको उनके लिए अतिरिक्त समय देना होगा ताकि वे व्यक्तिगत रूप में इस समय कार्य कर सकें) तब आगे बढ़ें।
- अध्याय एक तक उनको दो के जोड़े में बाँट दें। जाँच व अध्याय एक का अनुकरण करें।
- जब आप कमरें में इधर-उधर चलकर देखरेख करते हैं, प्रश्नों के जवाब देने को उपलब्द रहे।
- उन्हें वापस बुलायें तथा प्रश्न पूछने का अवसर दें।
- उनसे पूछें कि क्या कोई एक मिनट में अपनी गवाही देना चाहेगा। अगर गुजांइश है तो ज्यादा लोग भी गवाही दे सकते हैं।
- जो गवाही दें उनका प्रोत्साहन व प्रसंशा करना न भूले।
- जब वह गवाही दे चुके तो, समूह से कहें कि वह पहचाने कि पहले वह स्त्री/पुरूष कैसे थे, और अब कैसे हैं। सज्जनता से उनकी उन्नति हेतू सलाह दें। परन्तु ध्यान दें कि किसी को आपकी बातों से ठेस न लगे।
- किसी एक ऐसे व्यक्ति को देखें जिस पर घर के प्रगटीकरण को कर सकें। (अन्तराल के बाद)

अन्तराल (15 मिनट)

अन्तराल के समय, घर पर प्रदर्शन की तैयारी करें

- जिन लोगों को आप इस प्रदर्शन में सम्मिलित करने जा रहे हैं उन्हें जरूर तैयार करें।
- जब आप किसी घर में प्रदर्शन हेतू भेंट करने जाते हैं एक सहभागी को अपने साथ ले जाने को चुने (जिनसे एक मिनट की अच्छी गवाही दी हो) उनसे आपका साथी बनने को कहें। उनसे कहें कि वह आपका अनुसरण करें तथा जब आप उन्हें आमन्त्रित करें वह अपनी गवाही को दें।
- जिस जोड़े से आप भेंट करने जा रहे हैं उसको नाटयरूप देने के लिए एक जोड़े को चुनें।
- जिन्हें आप चुने उन्हें निर्देश दें कि उन्हें ऐसे गैर मसीहीयों की जैसे अभिनय करना है जो सुसमाचार हेतू खुले हैं तथा प्रभु को ग्रहण करना चाहते हैं। उनसे कहें कि वे जवाब दें कि वह दाहिने चक्र में हैं। मसीह जीवन से बाहर है जैसे सुसमाचार पुस्तिका में दर्शाया गया है, लेकिन चाहते हैं कि दाहिने ओर आ जायें। वे प्रभु को गृहण करने के लिए अपनी इच्छा से आपके साथ प्रार्थना करें। वह ''जीवन समूह'' तथा सामर्थी आधारित शिक्षाओं में आने के निमंत्रण का सकारात्मक जवाब दें। (उनसे कहें कि वे इस कार्यक्रम में आपके लिए मुश्किले खड़ी न करें, इसको एक सकारात्मक अनुभव बनायें)।
- एक मेज़ के चारों ओर कुर्सियाँ डालें (इनमें से किसी की भी पीठ दर्शकों की ओर न हो)

भेंट करने का प्रदर्शन प्रारम्भ करें (30 मिनट)

- पुरे समूह को समझा दें कि आप इस भेटवार्ता में सामर्थी व्यक्तव्य के अध्याय 3 पर आधारित, क्या कार्य करेंगे।
- प्रशिक्षण में शामिल प्रत्येक को पर्चे देकर पूंछें, क्या आप परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना चाहोगे? या क्या आपने चार आत्मिक नियमों के बारे में सुना है? पुस्तिका में! जब आप प्रर्दशन के दौरान उस जोड़ें को पुस्तिका से पढ़कर बता रहे हो, तब दर्शकों को उन बातों का अनुसरण करने को कहें।
- अपने साथी व उस जोड़े का परिचय दें जिससे भेंट करने गये हैं।
- आप और आपका साथी नाटक करें कि आप उनके द्वार पर पहुँच गये हैं। खटखटायें। वो आपको बुलाते हैं तथा आपसे स्थान ग्रहण करने को कहते हैं। आप उस व्यक्ति के बगल में बैठें जिसे आप सुसमाचार सुनाना चाहते हैं।
- ''सामर्थी व्यक्तत्व'' के सी. आगमन रीति के अध्याय तीन में दिये गये भेंट के तरीके का अनुसरण करें।

ध्यान दें :- सुसमाचार पुस्तिका को बिना टिप्पणी किये पढ़ना न भूलें। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप इस पुस्तक को आदर्श बनायें:

- भेंट करने के प्रदर्शन के पश्चात, जिन्होंने इसमें भाग लिया उन्हें धन्यवाद दें।
- सामर्थी व्यक्तत्व पर या भेंटवार्ता पर प्रश्नों को अवसर दें।
- प्रत्येक को उत्साहित करें कि इस हफ्ते वह किसी को यह पुस्तिका जरूर दें। उन्हें याद दिलायें कि इसे करना बहुत आसान है तथा इसका बड़ा प्रतिफल है।
- उन्हें समझादें कि अगुवे उनके द्वारा आये चेलों को सामर्थी व्यक्तत्व के बारे में बतायेंगे परन्तु प्रत्येक को प्रशिक्षण हेतू प्रोत्साहित किया जाता है।
- समूह को वापस बुलाकर निर्णय करें कि कौन किसको, सामर्थी व्यक्तत्व के बारे में बतायेगा :-

कार्यशाला के पश्चात ____________________ शिक्षा देगा ____________________
कार्यशाला के पश्चात ____________________ शिक्षा देगा ____________________
कार्यशाला के पश्चात ____________________ शिक्षा देगा ____________________

- जाँच के लिए अध्याय दो – तैयारी की शिक्षा देखें। इससे पहले कि वह अपने साथी से अगली बार मिले उन्हें इसे पूरा पढ़ना व करना आवश्यक है।
- उनको अवसर दें कि कार्यशाला के पश्चात हफ्तों में वह अपने बकाया कार्य को पूरा करने के लिए अपने साथी के साथ दिनाँक व समय निर्धारित करें। जैसे सामर्थी शिष्यता व आधार में दिया है वे किसी भी एक जान को सामर्थी व्यक्तत्व सिखलायें। ये लोग इससे पहले कि किसी व्यक्ति को अध्याय एक की शिक्षा दें वे चाहेंगे कि वह अपने साथी के साथ में अध्याय तीन को समाप्त कर लें।
- शायद आप और भी सामर्थी व्यक्तत्व की कार्यशाला चलाना चाहें (2 घण्टे)

दिनाँक ________________ समय ________________ स्थान ________________

- उनके साथी के साथ उन्हें प्रार्थना में समय व्यतीत करने दें तत्पश्चात आप समाप्त कर दें।

हमारी शिष्य-निर्माण प्रक्रिया कार्यशाला का विस्तार

पुन:विचार -

परमेश्वर का उसकी कलीसिया के लिए क्या उद्देश्य है?

महान आज्ञा -

''स्वर्ग का सारा अधिकार मुझे दिया गया है, इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है मानना सिखाओ, और देखो मैं जगत के अन्त तक तुम्हारे साथ हूँ'' मत्ती 28:18-20

महान आज्ञा कहती हैं ''सारे देशों के लोगों को चेला बनाओ''

एक चेला कौन है ?

जिसने यीशु मसीह को ग्रहण किया है तथा उसकी शिक्षाओं का अनुसरण करता है।

हम चेला कैसे बनाते हैं ?

हम स्वयं चेले हों तथा दूसरों को निम्न बातों द्वारा चेला बनायें :-

- जाने के द्वारा - प्रचारकार्य
- बपतिस्में के द्वारा - इस तथ्य को निश्चित करना, कि वह मसीह की मृत्यु, दफन, तथा पुनरुत्थान से जुड़े हैं।
- आज्ञापालन के द्वारा - चेला बनाना

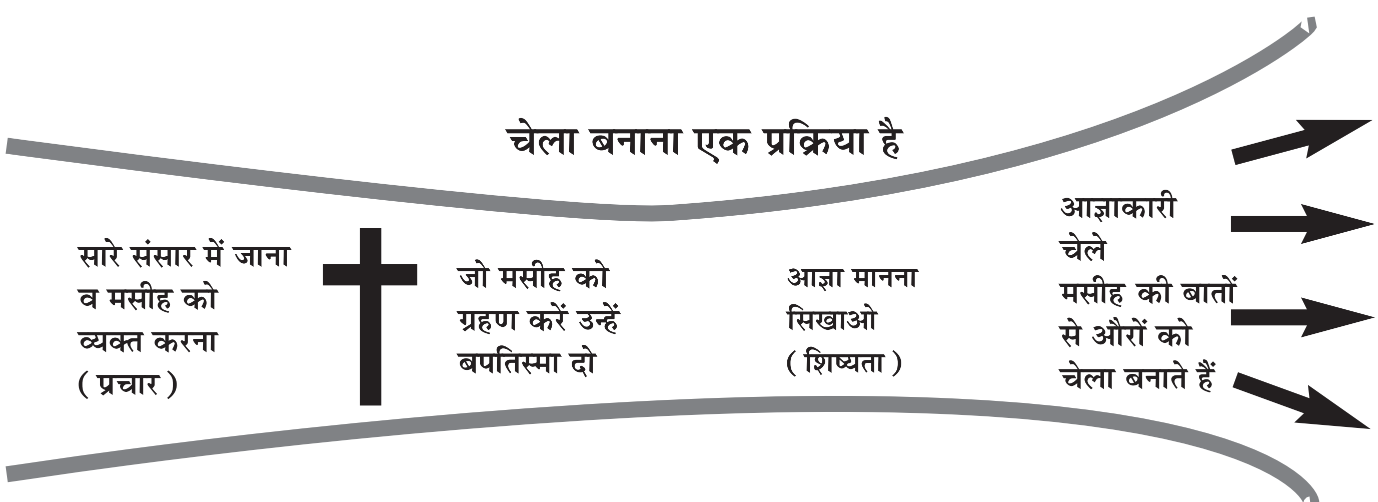

चेले बनाना कलीसिया का लक्ष्य है
क्योंकि यह उस महान आशा का भी लक्ष्य है।

चेलों का निर्माण करने वाली प्रक्रिया

एक बढ़ते हुए आत्मिक परिवार होने के लिए हमें चेलों का निर्माण करना आवश्यक है। एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें बाइबल के सिद्धान्त हों तथा उसका अनुसरण हमारे लक्ष्यों को पूरा करने व महान आज्ञा को पूर्ण करने में हमारी सहायता करें।

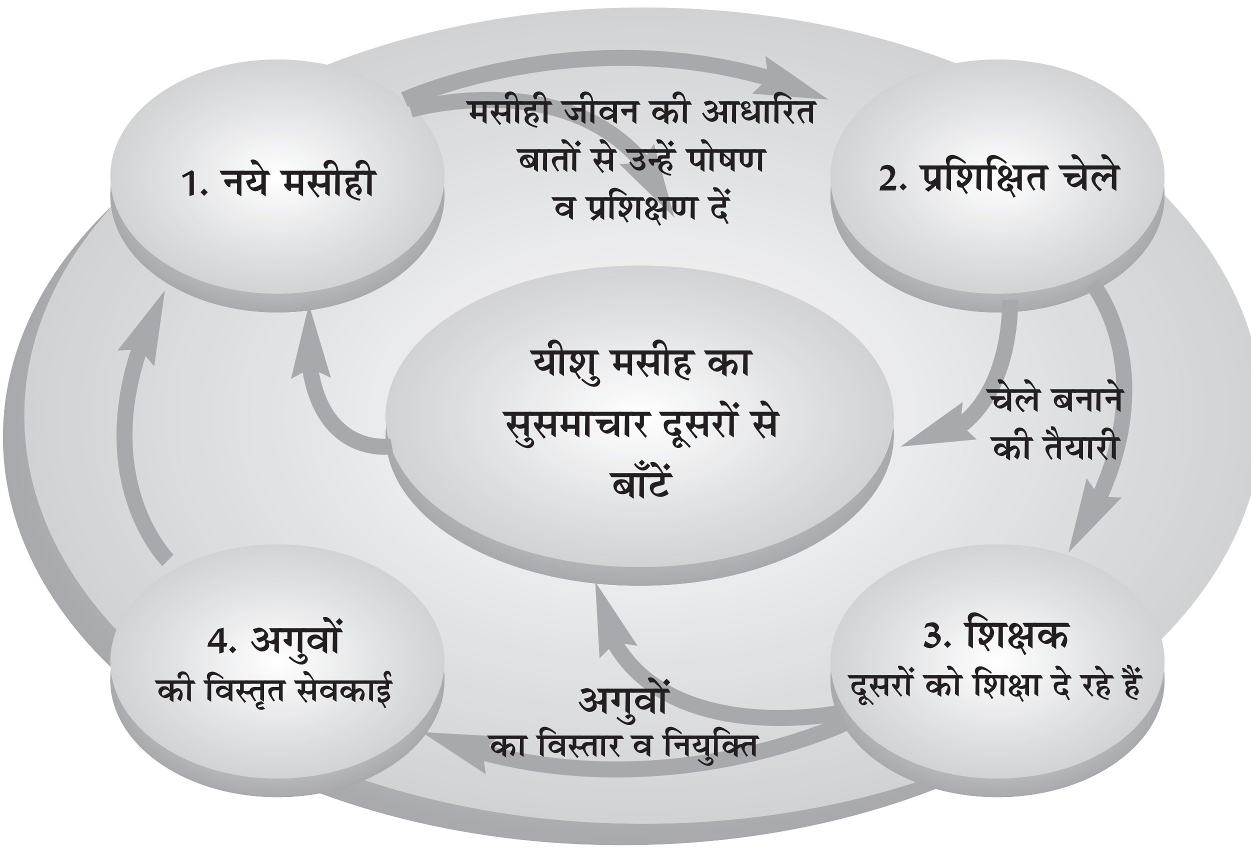

महान आज्ञा को पूर्ण करने के लिए चेलों का निर्माण करने वाली प्रक्रिया अति आवश्यक है।

जोड़ने वाली कलीसिया व पुनःउत्पादन करने वाली कलीसियाओं में भिन्नताऐं

(यह 30 या अधिक लोगों के समूह में उत्तम परिणाम देता है)

1. समूह के 2 लोगों को सामने बुलायें। एक व्यक्ति पास्टर A तथा दूसरा पास्टर B का अभिनय करेगा।

2. आप समूह को बताएं कि दोनों के पास समान योग्यताऐं हैं तथा उनकी कलीसियाऐं भी बराबर है। पास्टर A पुन:उत्पादनकारी चेले-निर्माण करने की क्षमता को नहीं समझते हैं। वह अपनी कलीसिया को जोड़ने के द्वारा बढ़ाना चाहते हैं। पास्टर B पुन:उत्पादनकारी प्रणाली को समझते हैं।

3. पास्टर A के साथ प्रदर्शित करें। उनके कान में फुसफुसायें फुSSSS (यह प्रगट करता है कि उसने वचन सुना तथा मसीह को गृहण किया।) अब पास्टर A दर्शकों में जायेंगे (इसके पश्चात आप जाकर पास्टर B को निर्देश दें) तथा वैसे ही दूसरों के साथ करेंगे। एक व्यक्ति को पीछे से आगे लाकर तथा उसे वहाँ छोड़ दिया (सामने कहीं किनारे पर) पास्टर A यही कार्य समूह के प्रत्येक व्यक्ति के साथ करेंगे स्त्री व पुरूष दोनों से।

4. अब पास्टर B के साथ प्रदर्शन करें। जैसे ऊपर 3 में किया ठीक वैसे ही, जब वह व्यक्ति को आगे लाता है तो उसे ग्रहण करें। (सामने दूसरी तरफ ले जाकर) वह उसके कानों में दूसरी बार फुसफुसाहट करें (प्रगट करता है कि वह उसे चेला बना रहा है) तब वह व्यक्ति अपने नये चेले के पास जाता है। जो दर्शकों में है वे सारे ऐसा नाटक करेंगे जैसे ये सारे दूसरों को मसीह में अगुवाई कर रहे हैं (फुSSSS) उनको सामने लायें, उन्हें चेला बनायें (फुSSSS) प्रत्येक जन अपने चेलों को सुनाकर उसे वापस लेकर जाता है जब तक कि वह सारे लोगों तक न पहुँच जायें।

5. ध्यान से देखें की प्रत्येक पास्टर निर्देशों को अच्छे से समझ गया तथा जल्दी-जल्दी आगे बढ़ें (परन्तु सावधानी से) तब उन्हें बाहर भेज दे ताकि वह जरूरत मन्दों तक पहुँच सकें।

6. प्रारम्भ में ऐसा प्रतीत होगा कि दोनों ही पास्टरों की कलीसिया एक जैसे ही बढ़ रही हैं। परन्तु पास्टर B की कलीसिया जल्द ही तेजी से (अपने आप) वृद्धि करेगी जब उनमें पुन:उत्पादन होगा।

7. जब वे सारे दर्शकों तक पहुँच जाये तब पूछें ''आप कौन-सी कलीसिया के भाग होना चाहेंगे?'' ध्यान दें पास्टर A के चर्च के लोग चाहेंगे कि पास्टर B के चर्च में चले जायें।

8. समझायें कि उनका चर्च एक विस्फोटक वृद्धि करने वाला शिष्य-निर्माणकारी चर्च है तथा आत्मिक पुन:उत्पादन पर आधारित हैं जिसका परिणाम आत्मिक गुणन है। हमें निरन्तर ऐसे चेले बनाना चाहिए जो दूसरों को चेला बना सकें।

शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया के प्रत्येक हिस्सों को समझना

एक **विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया,** कदम पर कदम बढ़ने वाला मार्ग है ताकि नया व्यक्ति मसीह आत्मिक जीवन में बढ़ने को अनुसरण करें। हर एक व्यक्ति अपने में अनोखा या अलग है इसलिए तरीका लचीला हो ताकि जरूरत पड़ने पर हर व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा किया जा सके। निम्न दो आवश्यक बातें वृद्धि की प्रक्रिया को आगे बढ़ाती है, **एक से एक को शिष्यता का समय** व **छोटे समूह का समय**।

एक से एक को शिष्यता

प्रत्येक व्यक्ति आत्मिक परिपक्कता के भिन्न स्तर पर है। प्रत्येक जन को बढ़ौतरी जारी रखने का अवसर दिया गया है। एक से एक प्रशिक्षण बहुत ही सम्पूर्ण व्यक्तिगत वृद्धि करने वाली रणनीति है जो उनकी व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करेगी। समूह का एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से (या स्त्री दूसरी स्त्री से) उनकी सहूलियत (समूह के समय को छोड़ कोई दूसरा समय) के अनुसार मिलता है जिसमें वे बाइबल की सच्चाई का साथ मिलकर अभ्यास कर सकें।

सामर्थी प्रारम्भिक बातें –	4 अध्याय तैयार किये गये हैं ताकि जवानों को स्थिर करने में सहायता हो।
सामर्थी शिष्यता –	9 अध्याय तैयार किये हैं जिससे मसीही जीवन में उनकी दृढ़ता में बढ़ौतरी हो।
सामर्थी व्यक्तत्व –	6 अध्याय उनके लिए तैयार किये गये हैं। जो यह सीखना चाहेंगे कि कैसे हम अपने विश्वास को व्यक्त करें। जब वह चर्च से प्राप्त लोगों के पास पतों पर मिलने जायेंगे, उनको इसका अवसर दिया जायेगा।

एक से एक के प्रत्येक स्तर पर ज्यादा मजबूत समर्पण की आवश्यकता पड़ती है।

जो बढ़ना चाहते हैं उनके लिए एक से एक का प्रशिक्षण उपलब्ध है।

एक से एक का सम्बन्ध गुणवत्तापूर्ण शिष्यों व अगुवों का निमार्ण करने में सहायक होता है।

छोटे समूह

छोटे समूहों का सन्दर्भ, **प्रेम करना, देखरेख** व **ऐसा पारिवारिक** माहौल है जहाँ प्रत्येक जन स्वस्थ वृद्धि को महसूस कर सके। इसे बहुत सरल बनाया गया है। ताकि कोई नया इसे देखकर न घबरायें। लगातार आने वालों के लिए यह एक आनन्ददायक जगह है जहाँ वह अपने मित्रों को ला सकते हैं। खाली कुर्सियाँ उन्हें याद दिलाती है कि उन्हें अपने मित्रों को और उत्साहित करना है तथा उनके लिये प्रार्थना करना है।

छोटे समूह की कार्यक्रम सूची इस प्रकार है :

1. स्वागत / बाँटना, या व्यक्त करना
2. अराधना / प्रार्थना
3. जीतना (प्रचार की रणनीति) / प्रार्थना
4. वचन / प्रदर्शन के साथ बाइबल अध्ययन
5. कार्य / एक से एक द्वारा शिष्य तथा अगुवों का विकास

छोटा समुह इन बातों से बना है :-

(L) एक अगुवा
(H) मेज़बान
(NC) नया मसीह
(CV) कलीसिया में आगन्तुक
(A) उप-अगुवा प्रशिक्षण पा रहा अगुवा
(C) एक मसीही जो हर स्तर की परिपक्वता में रूची लेता है
(S) खोजी (आमन्त्रित (H) मित्र है जैसे ऊपर दिया है।
(E) खाली कुर्सी जिसके लिए नये व्यक्ति की अपेक्षा है।

एक समूह 4 लोगों के साथ में प्रारम्भ किया जा सकता है। जो कि L, A, H और C करके दिखायें गए हैं।

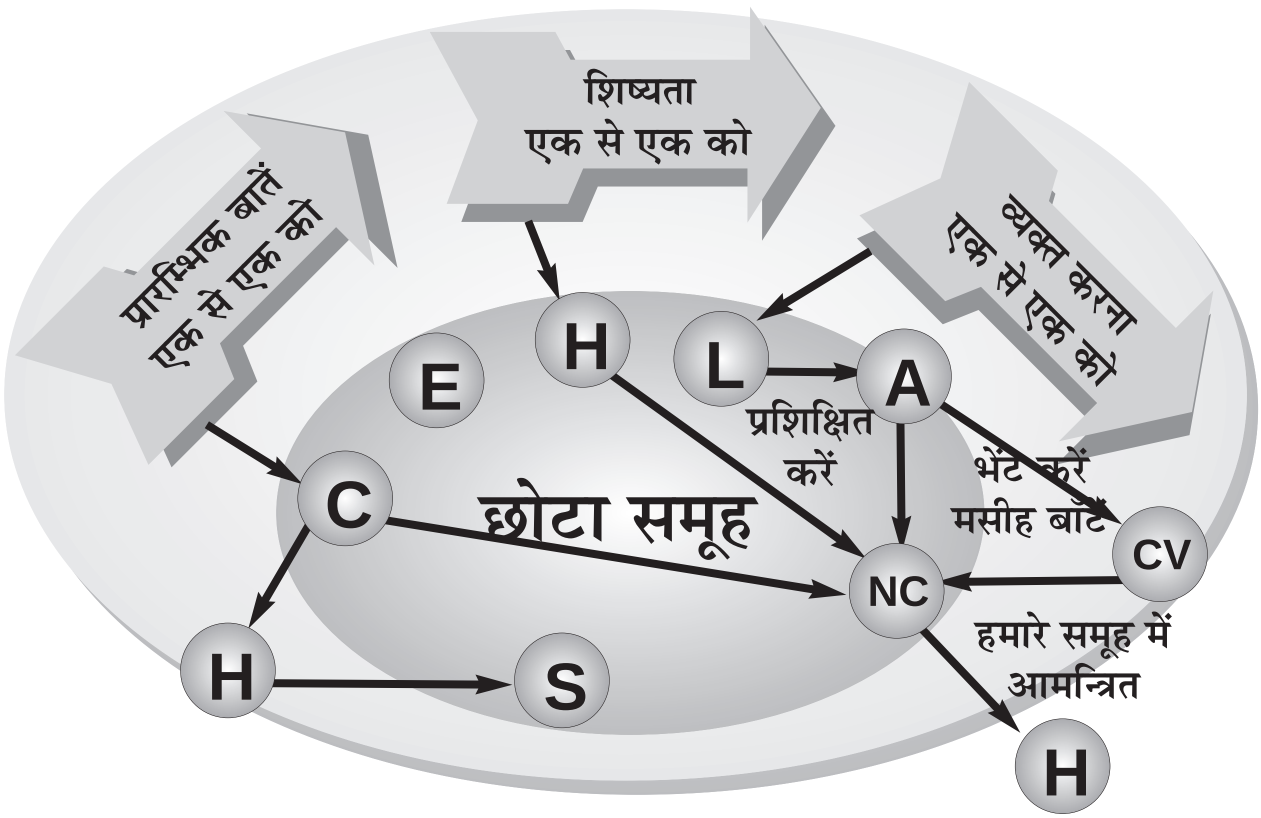

एक-से-एक + छोटे समूह = जीवन समूह

विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया में कुछ लोगों के प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात वह प्रथम जीवन-समूह प्रारम्भ कर सकते हैं।

उपरोक्त चित्र में इस जीवन समूह का अगुवा अपने उप-अगुवे का **सामर्थी व्यक्तत्व** से प्रशिक्षण करता है। (**सारा एक से एक का कार्य सामूहिक कक्षा के बाद होगा**) जैसे वे किसी आगन्तुक (CV) के घर पर भेंट करने को जाते हैं। सुसमाचार प्रचार किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन समूह में आमन्त्रित किया जाता है, यदि कोई व्यक्ति प्रार्थना के दौरान प्रभु को अपने जीवन में ग्रहण करता है तो उसे नये मसीह होने के नाते **सामर्थी प्रारम्भिक बातों** की शिक्षा हेतू उत्साहित किया जाता है। उन्हें समूह में से किसी मसीही (C) के साथ जोड़ा (साथी) बना दिया जाता है। **सामर्थी प्रारम्भिक बातों** की समाप्ति पर मेज़बान (H) उनकी सामर्थी शिष्यता में अगुवाई कर सकते है। यदि वे चाहें तो उप-अगुवे से जिन्होंने अगुवे (L) से शिक्षा प्राप्त की है। **सामर्थी-व्यक्तत्व** की शिक्षा भी प्राप्त कर सकते है।

जीवन समूह सेवकाई को एक अर्थ प्रदान करता है।

शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया - अगुवों के विकास हेतू एक उत्तम आधार प्रदान करती है

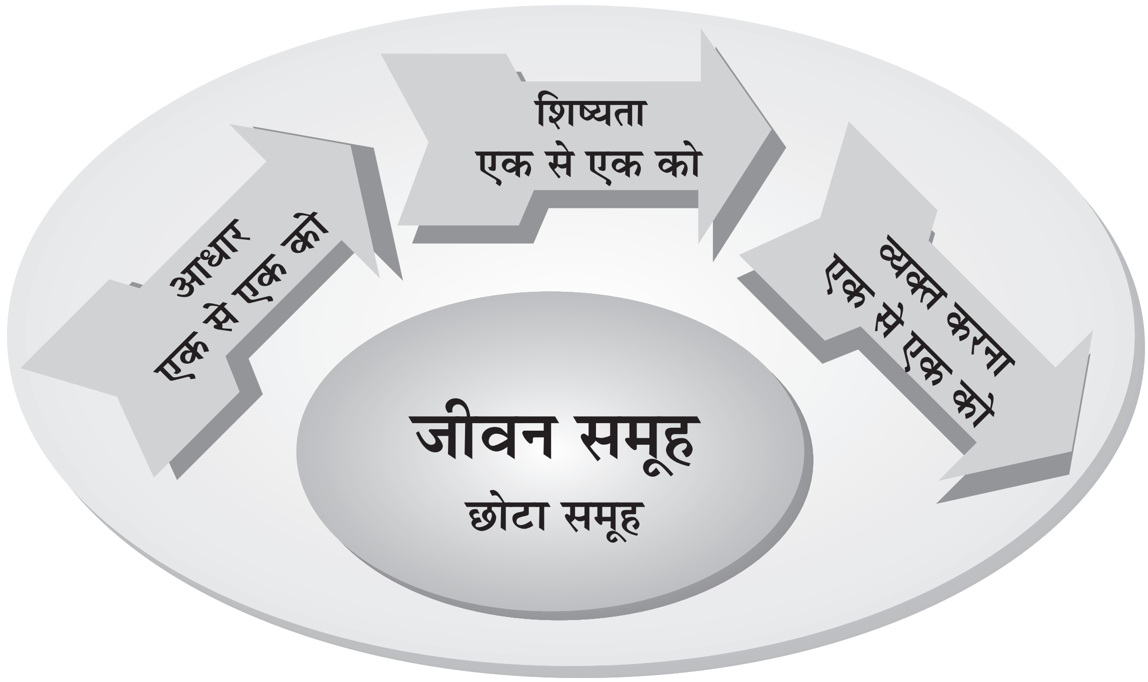

अगुवों का विकास

छोटे समूहः

- **समूह का प्रारम्भ** (S) (4-6 लोग) इसमें अगुवे तथा क्षमताशील अगुवे व उनके जीवनसाथी सम्मिलित हो सकते हैं। ये अगुवे कलीसिया में विभिन्न सेवकाई निभा सकते हैं। इसके साथ-साथ नये चेलों तथा खोजियों को भी शामिल करें (जिन्होंने अभी भी मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार नहीं किया है)

एक-से-एकः

- अगुवा उसका/उसकी उप-अगुव(S) को (माह में एकबार) **सामर्थी-व्यक्तत्व** द्वारा शिक्षा देता है तथा वो किस प्रकार से जीवन समूह की अगुवाई, **उप-अगुवों के प्रशिक्षण द्वारा** करना है (माह में एकबार) सीख सकते हैं।
- अगुवा उन लोगों द्वारा प्रारम्भ कर सकता है जो सामर्थी प्रारम्भिक बातों और सामर्थी शिष्यता की शिक्षा प्राप्त किया हुआ हो, या वह उन्हें व्यक्तिगत रूप से प्रशिक्षित करें या फिर कार्यशाला में तत्पश्चात उनके द्वारा दूसरों को, विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रणाली का इस्तेमाल करके शिक्षा देना सिखायें। लोग ज्यादा रूचि के साथ तब सीखतें हैं जब कोई खुद उनके चहेते गुण में प्रभावशाली ठग से आदर्श प्रस्तुत करता है। जिसे वे सीखना चाहते हैं, तब वह उसका अभ्यास स्वयं करते हैं।

अगुवे का विकास पुनःउत्पादन की कुंजी है।

सामर्थी जीवन प्रक्रिया पुनःउत्पादन करती है

अगुवे का विकासः

जैसे ही अगुवे व चेले विकसित हो जाते हैं, प्रत्येक अन्य समूह को प्रारम्भ करता है जिससे दो या तीन जीवन समूह का उत्पादन होता है।

छोटा समूहः

- प्रत्येक सप्ताह अगुवा समूह की अगुवाई करता है।
- उप-अगुवा अब उसके समूह का अगुवा बन जाता है व अगुवाई करता है।

एक-से-एक कोः

- प्रत्येक अगुवे के पास उसके अपने उप-अगुवे हैं जिन्हें वह सामर्थी व्यक्तत्व (माह में एक बार) तथा **उप-अगुवों को प्रशिक्षण देना सीखें** से (माह में एक बार) सिखाता है।
- समूह के सदस्य दूसरे लोगों को **सामर्थी प्रारम्भिक बातों** व **सामर्थी शिष्यता** से सिखाते हैं। (सामुहिक कक्षा के अलावा हफ्ते में एक बार)

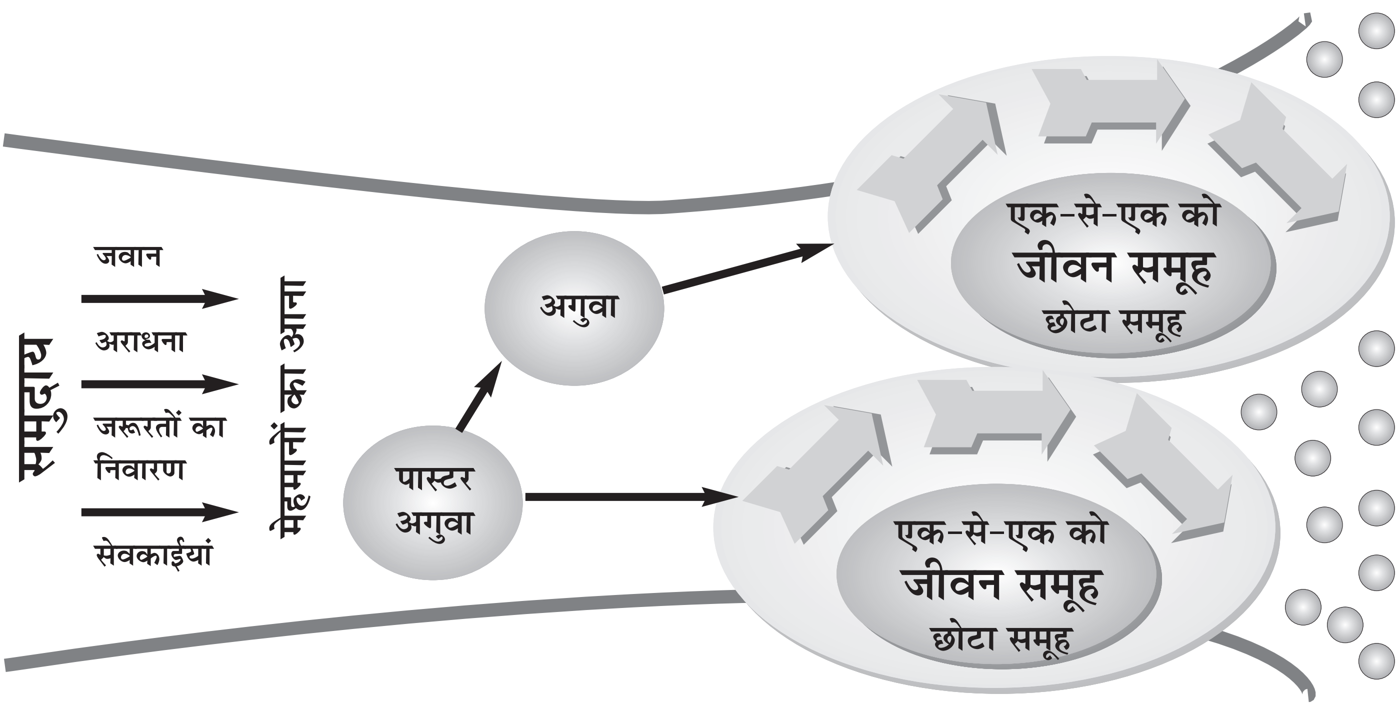

एक उप-अगुवा अब तैयार है, नये प्रशिक्षित अगुवे नये समूहों की अगुवाई हेतू तैयार है अतः सेवकाई ज्यादा से ज्यादा समूहों में बड़ सकती है।

संसार के छोर तक पहुँचना
पुनःउत्पादन का परिणाम है।

सामर्थी जीवन प्रक्रिया फैलती है

अगुवों का विकास

छोटे समूह (अगूवों का):

- पासबान प्रशिक्षक के रूप में प्रतिमाह दर्शन की चर्चा, सूचनाओं, समस्याओं के समाधान, प्रार्थना तथा वह अगुवा जो जीवन समूह को प्रशिक्षित करता है से प्रशिक्षण देने को जमा होते हैं।

एक-से-एक को:

- प्रत्येक अगुवा अपने उप-अगुवे को **व्यक्तिगतरूप** से **सामर्थी व्यक्तत्व** की शिक्षा (माह में एक बार) देता है तथा उत्साहित करने के लिए प्रार्थना, व प्रशिक्षण के लिए जमा होते हैं कि कैसे **उप-अगुवों के प्रशिक्षण-अगुवाई करना सीखें** द्वारा छोटे समूह की अगुवाई करें। (माह में एक बार)
- समूह के सदस्य, मित्रों व अन्य सदस्यों को **सामर्थी प्रारम्भिक बातों,** व **सामर्थी शिष्यता** से प्रशिक्षण देते हैं (सामुहिक सभा के अलावा हफ्ते में एक बार)

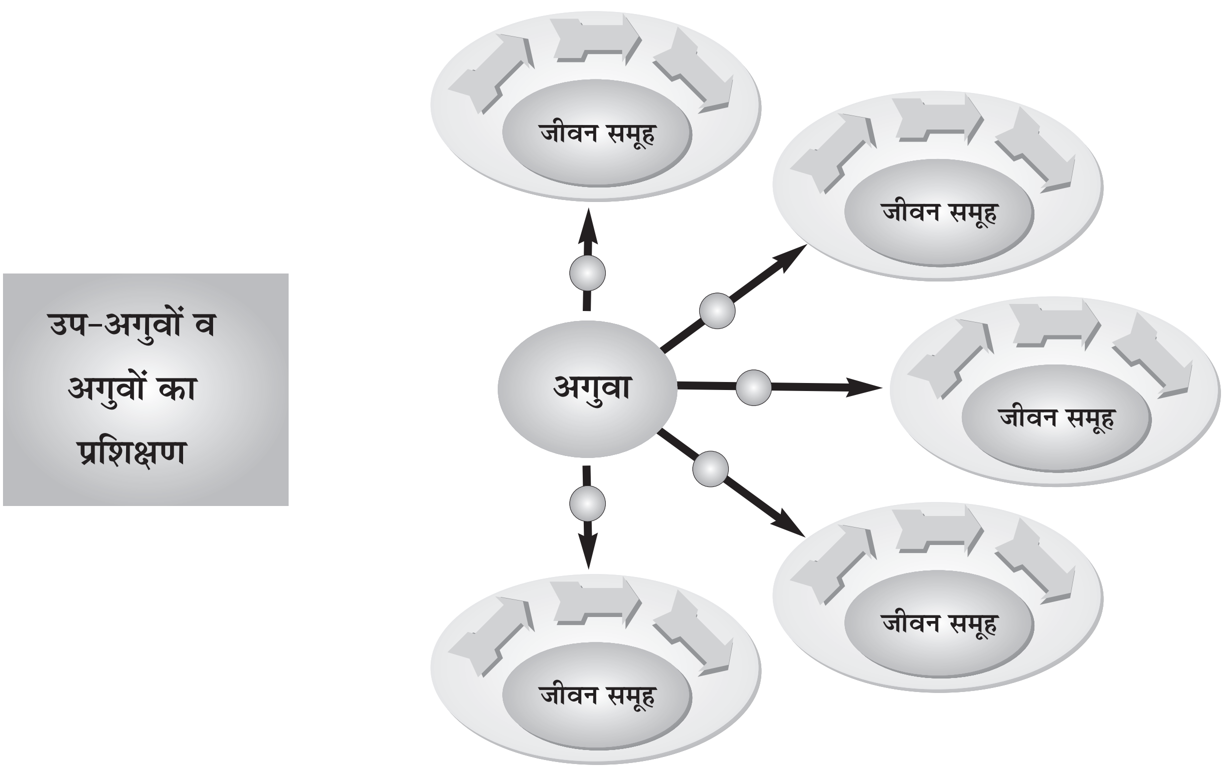

वह अगुवे जिन्होंने अपने उप-अगुवों को शिक्षा व उन्हें विकसित करके कि वह नये जीवन समूह की अगुवाई कर सकें, - स्वयं में उत्पादन किया है वह निरन्तर यह प्रक्रिया उनका कोच (प्रशिक्षक) बनके कर सकते हैं।

पुनःउत्पादन संसार तक पहुँचने हेतू परमेश्वर की रचना है।

शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया की क्षमता

अगुवे का विकास

छोटा समूह कोच का :

- पास्टर निरन्तर कोचों (शिक्षकों) से दर्शन व योजना के तहत मिलता रहेगा तथा ''एक विजयी दल-शिक्षकों का स्रोत'' का इस्तेमाल करेगा।
- कोच लोग अपने जीवन समूह अगुवों से लेखालेना के लिए, सम्सयाओं के समाधान हेतू, प्रार्थना व प्रशिक्षण हेतू मिलेंगे। अत: ये लोग वह अगुवों जो जीवन समूह अगुवों का प्रशिक्षण करते हैं'' का इस्तेमाल करेंगे।

एक-से-एक को :

- हर एक जीवन समूह अगुवा अपने उप-अगुवे को **सामर्थी व्यक्तत्व** से (माह में एक बार) शिक्षा देगा तथा उन्हें उत्साहित करने हेतू, व प्रार्थना तथा कैसे छोटे समूहों की अगुवाई की जाये के प्रशिक्षण हेतू मिलेंगे।
- अत: ये लोग **उप-अगुवों के प्रशिक्षण-अगुवाई करना सीखें''** का इस्तेमाल करेंगे। (सामुहिक सभा के अलावा समय निकलकर सप्ताह में एक बार)

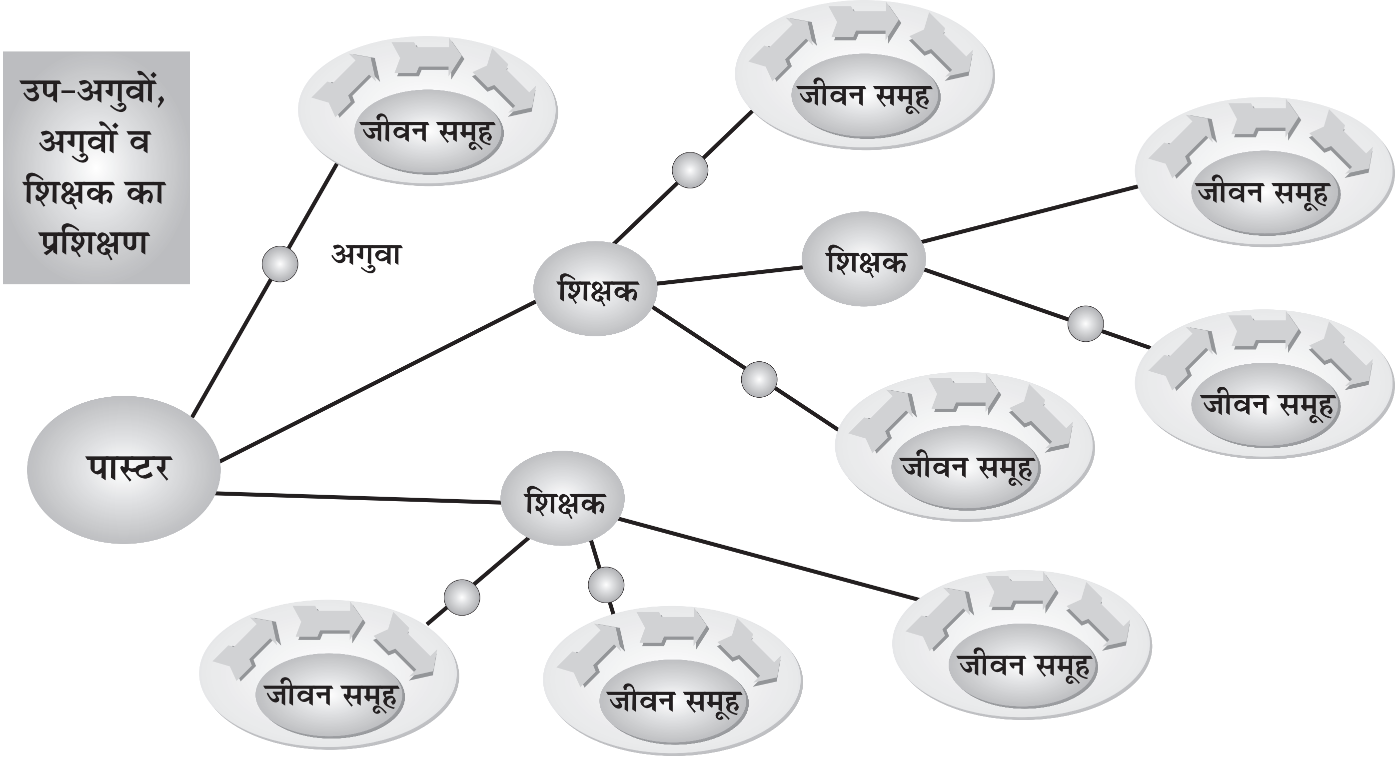

जैसे-जैसे पास्टर व शिक्षक कलीसिया के विभिन्न अगुवों को प्रशिक्षित करते हैं। वे **विस्फोटक-वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया** का उपयोग अपनी सेवकाई क्षेत्रों में कर सकते हैं।

अन्तत: वृद्धि के लिए अगुवाई को स्वरूप दिया है।

शिष्य-निर्माणकारी कलीसिया

कलीसिया की प्रत्येक सेवकाई में पुनः उत्पादन का कार्य हो रहा है

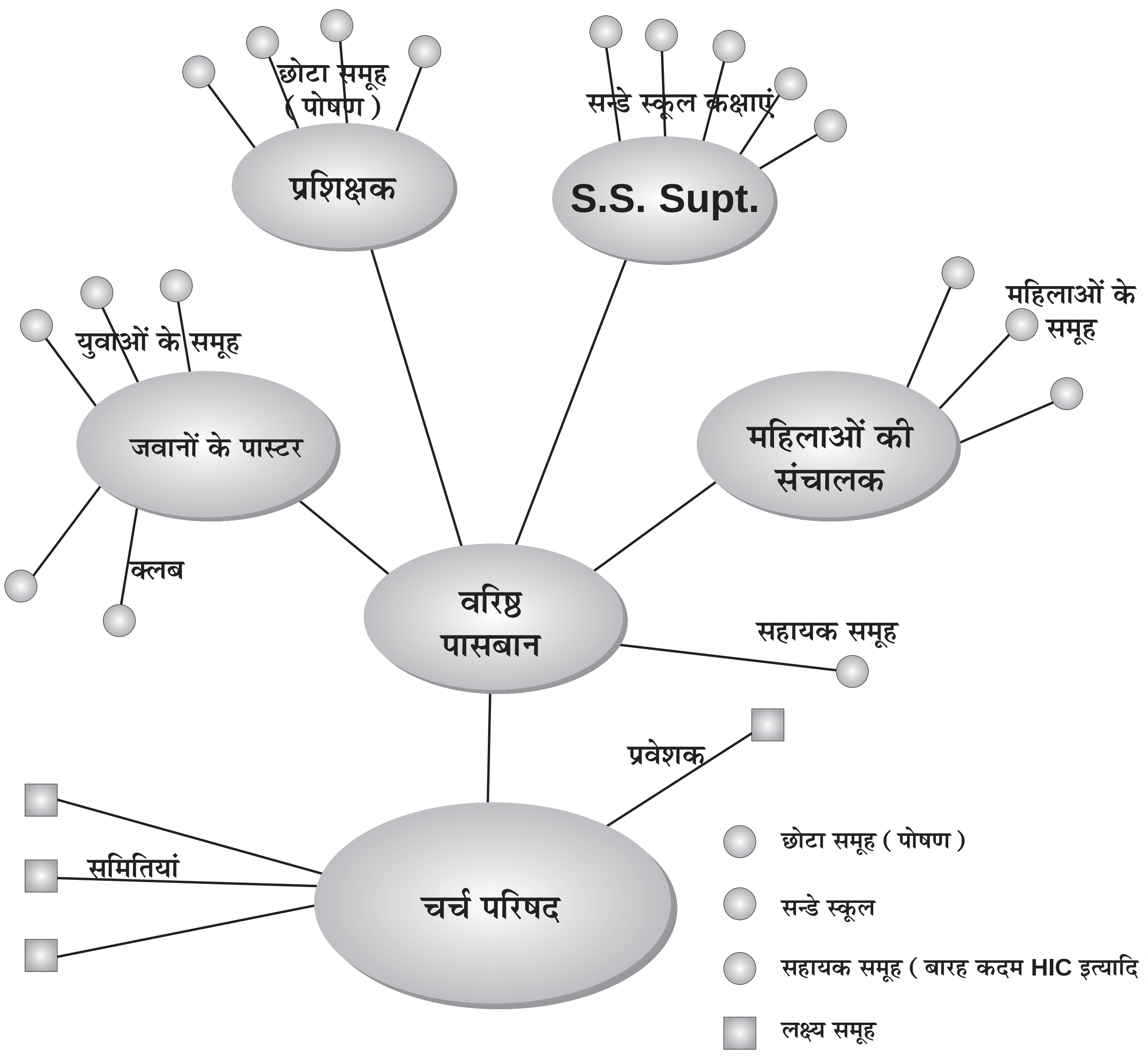

समूह उत्पादन करते व गुणन होते हैं ताकि अन्त में बहुत से गवाही देने वाले चेले हों, जो हमारे समुदाय व संसार तक पहुँच सकें।

प्रदर्शन

ध्यान दें : अगुवाई प्रशिक्षण पुस्तिका का प्रदर्शन निम्न प्रकार से करें-

- आप (कार्यशाला अगुवे) प्रथम जीवन समूह के अगुवे बने तथा दर्शकों में से एक का चयन अपना नव अगुवा बनने के लिए करें। उसके हाथ में ''**नव-अगुवों का अगुवाई प्रशिक्षण-अगुवाई करना सीखें**'' पुस्तिका को दें; ताकि वह समझ सकें कि आप उसे विद्यार्थी के रूप में किस प्रकार शिक्षा दे रहे हैं।

- उन्हें यह समझाये कि जैसे-जैसे आपका समूह बढ़ता है तथा नव अगुवे प्रशिक्षिक हो जाते हैं तो एक और नये जीवन समूह का आरम्भ किया जा सकता है।

- अपना नव-अगुवा ले (जो कि अब अपने समूह का जीवन समूह अगुवा है) दर्शकों में से किसी दूसरे को उसका नव अगुवा होने को चुनें (समूह का प्रारम्भ करने से पूर्व आपका अपना नव-अगुवा आपके साथ जरूर हो) तथा वह दूसरे को ''**नव-अगुवों की अगुवाई प्रशिक्षण-अगुवाई करना सीखें**'' वे यह बात दर्शाती है कि वह अपने नव-अगुवे को प्रशिक्षण दे रहा है।

- आप अपने नये जीवन समूह अगुवे को ''**अगुवा जो अगुवाई करता है-जीवन समूह अगुवों का प्रशिक्षण**'' पुस्तिका दें, यह दर्शाने हेतू कि आप समूह अगुवे का को निरन्तर शिक्षा दे रहे हैं।

- अब उसके नव-अगुवे को ले (जो अपने समूह का जीवन समूह अगुवा है) दर्शकों में से उसका नव-अगुवा होने हेतू एक को चुने। वह दूसरे को **नव-अगुवों का अगुवाई प्रशिक्षण-अगुवाई करना सीखें** पुस्तिका सुपूर्त करें। यह दर्शायेगा कि वह अपने नव-अगुवे को प्रशिक्षण दे रहा है।

- आपका अगुवा अब एक शिक्षक है; और आप उसे निरन्तर ''**एक विजयी दल शिक्षक प्रशिक्षक स्रोत**'' से प्रशिक्षण दे सकते हैं। तथा वह अपने नये जीवन समूह अगुवे के हाथ में ''**अगुवे जो अगुवाई करते हैं-जीवन समूह अगुवा प्रशिक्षण**'' पुस्तिका देगा जो उसकी समूह अगुवे को दी जाने वाली निरन्तर शिक्षा को दर्शाता है।

- जैसे-जैसे आप दूसरे चर्चों की सहायता शिष्य-निर्माणकारी चर्च बनने में करते हैं, लगातार इन भिन्न पुस्तकों को विभिन्न अगुवों तक आगे बढ़ाए, जिससे यह पुस्तकें नव अगुवों से जीवन समूह अगुवे तक, उनसे शिक्षकों तक, उनसे आचार्यों व अन्ततः कलीसियाओं तक पहुँच सकें।

सार

एक विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया

दूसरों के साथ प्रभु यीशु के सुसमाचार को बाँटें

- एक **कलीसिया बढ़ती** है क्योंकि वे **ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचते** हैं तथा अपने सदृश्य बनाते हैं।

मसीह जीवन आधारित बातों को लेकर नये मसीहियों को प्रशिक्षित करें।

- लोग **चेले बनना** सीखें।
- चेले तैयार हैं तथा **दूसरों को शिष्य बनाते हैं।**
- इसी समय किसी दूसरे व्यक्ति को यह शिक्षा देनें के द्वारा (विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया) वे स्वयं भी तेज़ी से परिपक्व होंगे।

वे उत्पादन करने को तैयार हैं

- बहुत से लोग चेले बनायेंगे।
- चेले बनाने वाले नव-अगुवा होना सीखेंगे और कुछ लोग जीवन समूह की अगुवाई करेंगे।

अगुवों का विकास तथा सेवकाई में नियुक्ति

- जैसे-जैसे आप भविष्य में उनके लिए प्रशिक्षणों का प्रयोजन करते हैं। वैसे-वैसे अगुवे विकसित होते जायेंगे।
- समूह सदस्य नये लोगों को आमन्त्रित करना व उन्हें शिष्य बनाना सीखते हैं।
- जीवन समूह अगुवा, नव-अगुवे का विकास करना तथा नये समूह को जन्म देना सीखता है।
- जीवन समूह अगुवा जो उत्पादन करता है (नव-अगुवे को अगुवा बनाकर) वह शिक्षक (कोच) बन जाता है।
- कोच सीखते हैं कि कैसे जीवन समूह अगुवों को उत्साहित करें व कोच बनायें।
- अन्य सेवकाइयां - जीवन समूह का इस्तमाल करती हैं (छोटा समूह कलीसिया के भीतर - व एक से एक को शिष्यता प्रक्रिया)
- कलीसिया के अगुवे जीवन समूह सेवकाई के स्वरूप को शिष्यता की प्रारम्भिक विधि के रूप में नये लोगों की सेवा के लिए ग्रहण करते व इस्तेमाल करते हैं।
- कलीसिया के अगुवों की प्राथमिकता, जीवन समूह अगुवों की सफलता में प्रशिक्षण द्वारा सहायता।
- परमेश्वर उनमें से कुछ को पूर्ण समय की सेवकाई में या मिशन कार्यभूमि में बुलायें।
- आपकी कलीसिया परमेश्वर की महान आज्ञा को पूरा करने में एक अहम भूमिका निभायेगी या शायद उससे भी बढ़कर करे।

प्रभु आपको आशीष दे जब आप अपनी कलीसिया की
अगुवाई सामर्थी भविष्य में करते हैं।

जीवन समूह अगुवे का समर्पण पत्र

मैं ______________________________, परमेश्वर के सम्मुख मसीह व उसकी कलीसिया की सेवा करने का समर्पण करता हूँ। मैं सेवक अगुवों के समान अपने चेलों का ख्याल रखूँगा व प्रेम में संसार तक कलाम पहुंचाऊँगा।

पताः ____

______________________________ फोनः ______________________________

ई–मेल: ____

यदि जीवन समूह अगुवा करके स्वीकृत होऊं तो मैं समर्पण करता हूँ:

__________ प्रतिदिन प्रार्थना करूंगा,

__________ बाइबल अनुसार विश्वास से जीऊँगा,

__________ पवित्र आत्मा को अपने जीवन में नियन्त्रण दूंगा,

__________ प्रभु का कार्य निरन्तर करूंगा,

__________ कलीसिया व अगुवों के प्रति वफादार रहूंगा,

__________ अपने चेलों को प्रशिक्षण दूंगा व जीवन समूह अगुवों के प्रशिक्षण हेतु अपने आचार्यों से मिलूंगा।

उपलब्धियों का प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि

____

ने सफलतापूर्वक

विस्फोटक वृद्धि शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया कार्यशाला

दिनाँक ________________ को सम्पन्न किया।

____

प्रशिक्षक

विस्फोटक वृद्धि

शिष्य-निर्माणकारी प्रक्रिया

अभ्यास पुस्तिका

अर्न्तराष्ट्रीय
डायनामिक कलीसियाएं

लीडरशिप ट्रेनिंग सेंटर
बाबूबासा / देवदंगा
पोस्ट ऑफिस आंचल,
सिलीगुड़ी 734403,
पश्चिम बंगाल